आर. एन. आई. 31109/77 | 2 जुलाई 2020, कुल पृष्ठ : 28, मूल्य : 2/- | Jaipur City / 224 / 2018-20

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

: संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर
पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल

: सम्पादक :
डॉ. संजीव कुमार गोधा

: सह-सम्पादक :
पण्डित परमात्मप्रकाश
भारिल्ल

अर्हं E-महाशिविर विशेषांक

वर्ष : 43, अंक : 7
जुलाई (प्रथम), 2020 वीर नि. संवत्-2546

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

जैन E - ग्रुप शिविर

10 मई से 17 मई 2020 तक

भव्य उद्घाटन समारोह

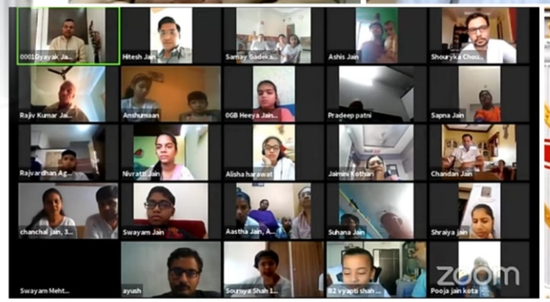

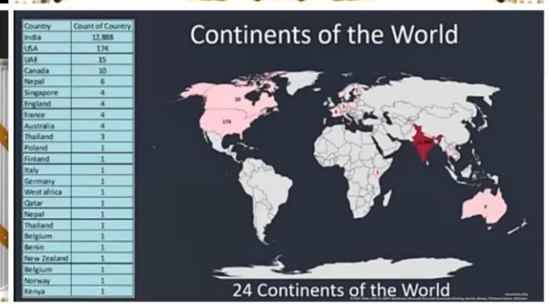

Country	Count of Country
India	12,886
USA	174
UAE	15
Canada	10
Nepal	6
Singapore	4
England	4
France	4
Australia	4
Thailand	3
Poland	1
Finland	1
Italy	1
Germany	1
West africa	1
Qatar	1
Nepal	1
Thailand	1
Belgium	1
Benin	1
New Zealand	1
Belgium	1
Norway	1
Kenya	1

अन्तरराष्ट्रीय अर्हं जैन ई-ग्रुप महाशिविर संपन्न

पण्डित टोडरमलजी के 300वीं जन्म जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा के संयुक्त तत्त्वावधान में अर्हं पाठशाला द्वारा दिनांक 10 से 17 मई तक 'जैन ई-ग्रुप शिविर' का आयोजन किया गया।

दिनांक 10 मई को अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में उद्घाटन समारोह हुआ, जिसमें श्री अतुलभाई खारा अमेरिका, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री संजयजी दीवान सूरत, श्री राहुलजी गंगवाल जयपुर, श्री विपुलभाई मोटानी मुम्बई के अतिरिक्त विद्वत्वर्ग में ब्र. यशपालजी जैन, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर आदि महानुभाव उपस्थित थे। सभा का संचालन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने किया।

शिविर में प्रात:काल जिनेन्द्र-पूजन एवं कक्षाएं, दोपहर में पाठ्यक्रम की कक्षाएं, सायंकाल जिनेन्द्र-भक्ति व सामूहिक कक्षाएं तथा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत मुख्यरूप से अर्हं जैन क्विज़ का आयोजन किया गया।

सायंकालीन सामूहिक कक्षाओं में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित विरागजी शास्त्री, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर आदि विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमलजी पर आधारित कक्षाओं का भी आयोजन हुआ, जिसमें सायंकालीन कार्यक्रम में पण्डित संजयजी जेवर द्वारा अपने मधुरकण्ठ से पण्डित टोडरमलजी की कथा का लाभ प्राप्त हुआ।

शिविर में सामूहिक कक्षा में भक्ष्य-अभक्ष्य, हमारा गौरव-हमारा इतिहास, पापी सुखी धर्मात्मा दु:खी क्यों?, दान और चतुर्विध संघ, जैनदर्शन के अध्ययन की आवश्यकता, बालकों में धार्मिक शिक्षण का महत्व व उपयोगिता, क्या धर्म की आवश्यकता है?, मन की बात-बच्चों के साथ एवं अनेक रोचक विषय जैसे- पंच परमेष्ठी, जीव-अजीव, सात तत्त्व संबंधी भूल, तीर्थंकर भगवान, गतियाँ, द्रव्य, अनुयोग, महामना पण्डित टोडरमलजी आदि अनेक विषयों को समझाया गया।

इस अवसर पर भारत के अतिरिक्त अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, यू.के., यू.ए.ई., केन्या सहित सम्पूर्ण विश्व के 25 देशों से 13126 विद्यार्थियों ने हिस्सा लेकर एक नया इतिहास रच दिया। आठ दिवसीय शिक्षण शिविर में शिक्षण कार्य के साथ विविध ज्ञानवर्धक, सांस्कृतिक व साहित्यिक कार्यक्रमों में हजारों विद्यार्थियों ने हिस्सा लेकर सभी का मन जीत लिया। इसके अन्तर्गत 'कौन बनेगा धर्म शिरोमणि', 'आप क्या सोचते हैं', 'अर्हं बोड मास', 'हमारे तीर्थंकर' आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से बच्चों ने भारतीय प्रतीक चिह्न एवं कथाओं का ज्ञान प्राप्त किया। 'अतीत के झरोखे' के माध्यम से महापुरुषों की यादें ताजा कीं, 'ई-शिविर ब्रेकिंग न्यूज', 'जैनधर्म की जय-जयकार', आई एम अर्हं आदि प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ। कण्ठपाठ प्रतियोगिता द्वारा विषयों को बच्चों के कण्ठ में पहुंचाया गया तथा अर्हं जैन क्विज़ ने सभी की दिनभर की थकावट को दूर कर दिया।

दिनांक 16 मई को हजारों साधर्मियों ने ऑनलाइन परीक्षा दी, जिसमें सभी का उत्साह देखते ही बन रहा था।

दिनांक 18 मई को सायंकाल भव्य समापन व पुरस्कार वितरण समारोह डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के कुलाधिपतित्व में तथा डॉ. शांतिकुमारजी पाटील की अध्यक्षता में आयोजित किया गया, जिसमें श्री अनंतभाई शेठ मुम्बई, श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर, श्री अजितप्रसादजी दिल्ली, श्री अमृतभाई मेहता अहमदाबाद, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ, श्री राहुलजी गंगवाल जयपुर, श्री सुशीलजी बजाज कोलकाता, श्री अनंतजी पाटनी अमेरिका एवं टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलजी गोदिका जयपुर ने अपने उद्गार व्यक्त किये।

डॉ. भारिल्ल ने कहा कि संस्कार बिना सभी सुविधाएं पतनका कारण होती हैं, अत: बच्चों को सम्पत्ति देने के पहले अच्छे संस्कार दो। यह शिक्षण शिविर नयी पीढी में सस्कारों के बीजारोपण के मुख्य उद्देश्य से लगाया गया था, जो ऐतिहासिक रहा, जिसमें पूरे विश्व ने जैनदर्शन के साथ भारतीय श्रमण संस्कृति व अहिंसा का पाठ पढा और आत्मा से परमात्मा बनने का मार्ग जाना।

सभा के अध्यक्ष डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने कहा कि आज के संस्कारित बच्चे भविष्य के भगवान हैं तथा ये ही संस्कार बच्चे में रहें तो इसमें कोई दो राय नहीं कि भावी इतिहास हमारा है।

सभा का संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने किया।

संपूर्ण शिविर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के आशीर्वाद, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के मार्गदर्शन, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के निर्देशन तथा पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित विरागजी शास्त्री, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर के सह-निर्देशन में संपन्न हुआ।

शिविर को सफल बनाने में पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित सुदीपजी शास्त्री, विदुषी प्रतीति मोदी, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित अर्पितजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित समकितजी शास्त्री, पण्डित अनुभवजी शास्त्री, पण्डित विनीतजी शास्त्री, पण्डित आकाशजी शास्त्री हलाज के साथ-साथ 300 युवा विद्वानों ने अपनी कुशल सेवाएं देकर जिनशासन की पताका को नभ मण्डल पर फहरा दिया।

शिविर के समस्त कार्यक्रम ज़ूम एप तथा पण्डित टोडरमल स्मारक के यूट्यूब चैनल पर प्रसारित किये गये, जिन्हें लगभग 3-4 लाख साधर्मियों ने देखा।

– आकाश शास्त्री, अमायन (को-ऑर्डिनेटर – अर्हं पाठशाला)

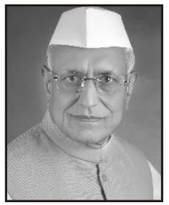

सभी पंथ व संप्रदाय के लोग हुए लाभान्वित

– डॉ. हुकमचंद भारिल्ल, जयपुर

भारत में वैदिक संस्कृति वाले अपने बच्चों को टी.वी. के माध्यम से धर्म का ज्ञान कराते हैं। यदि श्रमण संस्कृति के अन्तर्गत लोगों ने अपने बच्चों को धर्म का ज्ञान नहीं कराया तो वे भगवान महावीर का नाम भी नहीं जान पायेंगे। इसलिये बच्चों को धार्मिक संस्कार देने की व्यवस्था हमें स्वयं करनी पड़ेगी। हमने अपने बच्चों को जैनदर्शन, जैनधर्म, जैन संस्कृति से परिचित कराने के लिये शिविरों व महाविद्यालय की व्यवस्था तो की; परन्तु वर्तमान में महामारी के कारण सभी शिविर व महाविद्यालय बंद हैं। इसी बीच यह शिविर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं मुमुक्षु आश्रम कोटा के सहयोग से लगाया गया और अर्हं पाठशाला तो पूरा काम कर ही रही थी। लड़कों ने कितनी मेहनत की है, इसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। हमारे विद्यार्थी इतने उच्च कोटि के विद्वान और कार्यकर्ता हो गये हैं, यह मुझे इस शिविर में देखने को मिला। इस शिविर से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ।

आज तक शिविरों में, पंचकल्याणकों में जो सांस्कृतिक कार्यक्रम होते थे, मैं उनमें बैठता ही नहीं था। कार्यकर्ता व नाटक करने वाले लोग बहुत आग्रह करते थे, लेकिन मेरी रुचि ही नहीं होती थी। इस शिविर में किसी ने मुझे कोई विशेष आग्रह नहीं किया, कोई अपेक्षा नहीं की; लेकिन मैंने स्वयं ही सुबह 8 बजे की पूजा से लेकर शाम तक भक्ति, चर्चा, सांस्कृतिक कार्यक्रम और बीच में चलने वाली कक्षाओं को देखा। ये विद्यार्थी मुझे आकर बताते थे कि दादा आप यहाँ इस कक्षा में बैठे हैं। वे मुझे अलग-अलग कक्षाओं में ले जाते थे और जब पढाने वाले को पता लगता था कि दादा आये हैं, तो वे आशीर्वाद देने के लिये आग्रह करते थे - ऐसे रोजाना एक-दो मिनट उनकी क्लासों में घूमना होता था। ये बहुत अच्छा काम कर रहे हैं, मुझे बहुत खुशी हुई।

मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि इन विद्यार्थियों का लाभ समाज को इस तरह से मिलेगा; यह भी सहज ही हो गया। विद्यार्थियों ने पढाना शुरु कर दिया और देश-विदेश के लोग इन्टरनेट पर पढने लगे। इस शिविर में 4-5 वर्ष के छोटे बच्चों से लेकर 80-85 वर्ष के लोग भी शामिल थे। मैं ही था ना 85 वर्ष का, मैं सबसे बड़ा उपस्थित था और मेरे पोते की लड़की समदर्शी चार वर्ष की सबसे छोटे बच्चें के रूप में उपस्थित थी, उसने भी पूरा लाभ लिया, उसने भी कुछ बातें सीखीं और केवल वाणी से ही नहीं, जीवन में उतारने के लिये सीखी।

इस शिविर का लोगों के अन्दर क्या असर पड़ा है, वो मैंने देखा है। बिना किसी भेदभाव के इस शिविर में सबने लाभ लिया है। सबने सच्चे हृदय से इसकी अनुमोदना की है। जो कानजीस्वामी के अनुयायी हैं, उनने तो पूरा जमकर के लाभ लिया ही है, लेकिन जो कानजीस्वामी के संपर्क में नहीं हैं, मुनिराजों के भक्त हैं और जो अपने श्वेताम्बर भाई हैं, इस शिविर में उन्होंने भी भरपूर लाभ लिया है। इस शिविर के लगने से हमारी समझ में आ गया कि अब तो यही चलेगा। हमारा मूल तत्त्वज्ञान सब तक सहज भाव से पहुंच रहा है और पहुंचता रहे, इसी मंगल भावना के साथ मैं अपना मंगल आशीर्वाद देता हूँ और अब आगे 19 जुलाई से 28 जुलाई 2020 तक हम ऑनलाइन ई-शिविर लगाने वाले हैं; उसका लाभ लेने के लिये आप सबको आमंत्रण देता हूँ।

सम्पादकीय...

ऑनलाइन ई-शिविर द्वारा एक नया कीर्तिमान

– डॉ. संजीवकुमार गोधा, जयपुर

शिक्षण शिविरों का आयोजन वर्तमान युग को गुरुदेवश्री की देन है तथा बालकों में संस्कारों हेतु पाठमालाओं का निर्माण और उनको पढाने के लिये योग्य अध्यापक तैयार करने हेतु प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन इस युग को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अपूर्व देन है। शिविर व प्रशिक्षण शिविरों के साथ-साथ ग्रुप शिविर भी बहुत लगते रहे हैं।

अब जमाना बहुत तेजी से बदल रहा है, आज टेक्नोलॉजी का जमान है। तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिये भी हाइटैक होने की जरूरत है। बदलते जमाने के अनुसार तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार को गांव-गांव तक ही नहीं; घर-घर तक पहुंचाने के लिए नयी टैक्नोलॉजी का अनुकरण करने की आवश्यकता है और इस दिशा में बहुत बड़े स्तर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अन्तर्गत ''**अर्हं पाठशाला**'' ने विश्वस्तर पर ऑनलाइन ई-शिविर लगाकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है।

आठ दिवसीय इस विशाल शिविर में हजारों लोगों ने घर बैठे जिनवाणी का प्रत्यक्ष लाभ लिया। हमारे पास सैंकड़ों लोगों के फोन, मैसेज, ऑडियो वीडियो प्राप्त हुए, जिसमें उन्होंने इस अर्हं शिविर के माध्यम से अपने जीवन को बदलने की बात व्यक्त की। अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि शिविर में प्राप्त 13126 रजिस्ट्रेशन में से 4069 शिविरार्थी ऐसे थे, जिन्होंने अपने जीवन में कभी कोई शिविर अटेंड नहीं किया। उन्होंने जीवन में पहली बार वीतरागी तत्त्व की बात सुनी। अत: निश्चित ही यह शिविर अनेक लोगों के जीवन परिवर्तन में निमित्त बना है।

शिविर को सफल बनाने में हमारे मार्गदर्शक, निर्देशक, सह-निर्देशक, प्रान्तीय एवं क्षेत्रीय प्रभारी, सभी शास्त्री विद्वान, तकनीकी सहयोगी, मीडिया प्रभारी आदि अनगिनत लोगों ने नि:स्वार्थ भाव से अथक परिश्रम किया है, जिसे शब्दों में नहीं कहा जा सकता। इस शिविर में मुमुक्षु समाज की लगभग सभी संस्थाओं ने अपना भावनात्मक सहयोग दिया है।

पण्डित टोडरमलजी के त्रिजन्मशताब्दी महोत्सव वर्ष के मंगल प्रसंग पर पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा के संयुक्त तत्त्वावधान में लगे इस शिविर की व्यापकता का विहंगावलोकन करने के लिये जैनपथप्रदर्शक का यह विशेष अंक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के उपक्रम अर्हं पाठशाला एवं मुमुक्षु आश्रम, कोटा द्वारा संचालित –

अनुपम ई-शिविर - एक अनूठा प्रयोग

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री – टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

आज ई-शिविरों के माध्यम से हजारों कोमलमति बालकों को तन्मयता के साथ तत्त्वाभ्यास करते देख हृदय भावुक हो उठता है। **यूं लगता है मानो जिनेन्द्र भगवान के लघुनंदन मोक्षमार्ग में क्रीड़ाएं कर रहे हैं।** हम कह सकते हैं कि **तीर्थंकर परमात्माओं और गणधरदेवों की भवतापनाशिनी वाणी का प्रवाह अभी थमा नहीं है और हम इसे थमने भी नहीं देंगे।**

कितने सौभाग्यशाली हैं हम सभी कि आज जब सारा संसार कोरोना की महामारी से त्रस्त और मौत के भय से भयभीत, अपने-अपने घरों में दुबका हुआ महासंकट झेल रहा है, हम सभी लोग मिलकर जन्म-मरण का अभाव करने वाले उपक्रमों में व्यस्त हैं।

हमारे समक्ष चुनौती यह है कि आज संकट तो सभी के ऊपर है, संकट से तो कोई अछूता नहीं, चाहे राजा हो या रंक, बालक हो या वृद्ध और भारतीय हो या अमेरिकन। प्रश्न तो यह है कि क्या हम हाथ पर हाथ धरे, बैठे रहकर अपने दुर्भाग्य पर रोते रहें, प्रलाप करते रहें या **इस समय का उपयोग अपने आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करने में करें।** हमें ई-शिविर के रूप में इस समस्या का समाधान मिल गया।

आज देशभर में समाज की छोटी-बड़ी अनेक संस्थाओं के माध्यम से आयोजित होने वाले ई-शिविरों का एक निरंतर सिलसिला गतिमान है, जिनके माध्यम से देश-विदेश के हजारों आत्मार्थी अपने घर बैठे अध्यात्म की ज्ञानगंगा में स्नान कर रहे हैं।

पहले ऑनलाइन पाठशाला और अब विश्वव्यापी ऑनलाइन ई-शिविर के आयोजन की पहल करके पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के उपक्रम अर्हं पाठशाला ने तत्त्वप्रचार के क्षेत्र में एक युगान्तरकारी कदम उठाया है। इस शिविर के आयोजन में हमें सह-आयोजनकर्ता के रूप में मुमुक्षु आश्रम, कोटा का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ है, हम उनके आभारी हैं।

कौन नहीं जानता कि सम्पूर्ण विश्व में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ही एकमात्र ऐसी संस्था है, जो सम्पूर्णत: मात्र वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिये ही समर्पित है। तीर्थंकरों और गणधरों की वह भवतापहारी वाणी, जो आचार्य धरसेन और कुन्दकुन्द व उनके अनुगामी अनेक महान आचार्यों द्वारा यहाँ तक पहुंची और इस कलिकाल में पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने जिसका रहस्योद्घाटन किया, उस जिनवाणी के प्रचार-प्रसार में संलग्न पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये हर उस साधन का उपयोग करने में हमेशा पहल की है जो समयानुकूल हो, सार्वभौमिक हो और प्रभावशाली ढंग से इस कार्य को कर सके।

यह टोडरमल स्मारक भवन में संचालित महाविद्यालय में शिक्षित 1000 से अधिक शास्त्री विद्वानों और अब तक आयोजित हो चुके 54 ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविरों के प्रशिक्षित 12000 से अधिक शिक्षकों की विशाल टीम की उपलब्धता का ही सुफल है कि आज हम इस स्थिति में आ पहुंचे हैं कि सम्पूर्ण विश्व में एक साथ विशालतम स्तर पर किसी भी प्रकार का आयोजन करने में सक्षम हो सके हैं।

आज इन ई-शिविरों का आयोजन चाहे कोई भी संस्था क्यों न करे, उनका आयोजन, व्यवस्था और अध्यापन कार्य का सम्पूर्ण दायित्व हमारी उपरोक्त टीम के सदस्य ही संभालते हैं।

दिनांक 10 से 17 मई तक सम्पूर्ण भारतवर्ष और विश्व के 15 देशों में इन्टरनेट के माध्यम से आयोजित इस ई-शिविर में, लगभग 325 शास्त्री विद्वानों और तकनीकी टीम के सहयोग से हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त गुजराती, मराठी, कन्नड और तमिल भाषाओं में, लाभार्थियों के स्तर और आवश्यकता को देखते हुए छह प्रकार के पाठ्यक्रमों का शिक्षण किया गया। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के प्रवचन एवं पृथक्-पृथक् विषयों पर पृथक्-पृथक् विद्वानों के प्रवचनों का लाभ भी मिला।

इस सम्पूर्ण कार्यक्रम में विश्वभर से 13000 से अधिक रजिस्टर्ड छात्रों के अतिरिक्त हजारों अनरजिस्टर्ड लोगों ने ज़ूम एप और यूट्यूब के माध्यम से लाभ लिया।

इन ई-शिविरों की विशेषता यह है कि इसमें लाभार्थियों और शिक्षकों सभी के सम्पूर्ण श्रम और समय का उपयोग मात्र तत्त्वचर्चा में ही होता है। इसमें आवागमन के समय और श्रम की भी बचत होती है और तत्संबंधी व्यय की भी।

आयोजक आवास और भोजन आदि की व्यवस्थाओं से मुक्त रहते हैं और लाभ लेने वाले लोग शेष समय में अपने अन्य कर्तव्यों का पालन करने के लिये स्वतंत्र रहते हैं।

इस प्रकार हम अपने समय, शक्ति, श्रम और संसाधनों के अपव्यय से बच जाते हैं और हमें घर बैठे ही विश्व के सर्वश्रेष्ठ विद्वानों के समागम का लाभ सहज ही मिल जाता है। यही हम सबकी आज की सबसे बड़ी आवश्यकता भी है।

हमारे सभी कार्यक्रमों की सफलता का श्रेय हमारे श्रेष्ठ विद्वानों और समर्पित योग्यतम तकनीशियनों की विशाल टीम को जाता है, जिन्होंने इस शिविर के आयोजन के लिये महीनों पहले से दिन-रात कठोर श्रम किया। हम उन सभी के प्रति कृतज्ञ हैं और कृतज्ञता ज्ञापन हेतु उन सभी के नामों और कर्तृत्वों का उल्लेख हम इसी अंक में अन्यत्र कर रहे हैं।

हम कृतसंकल्प हैं कि भविष्य में भी इसीप्रकार के उच्च गुणवत्तायुक्त कार्यक्रमों का आयोजन करते रहेंगे, जिसमें व्यवस्थित और वैज्ञानिक विधि से तैयार किये गये पाठ्यक्रम और श्रेष्ठतम विद्वत्जनों की सहायता से यह तत्त्वज्ञान घर बैठे ही आप सभी तक पहुंचता रहे।

आइये हम सभी कदम से कदम मिलाकर इस दिशा में आगे बढें।

ये तत्त्वज्ञान की सर्जिकल स्ट्राइक है

इसमें कोई शक नहीं है कि समय बहुत स्पीड से बदल रहा है, काम करने के तरीके भी बदल रहे हैं और इस कोविड-19 ने देश और दुनिया की सोच ही बदल दी है, तो हमें भी तत्त्वप्रचार के माध्यमों में भी उतनी ही गति से परिवर्तन करना होगा और पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट इसमें सबसे आगे है, स्मारक भवन हमेशा से समय के साथ चला है, जिससे जिनवाणी लोगों के कण्ठ में उतार सकें।

हमारी बहुत सारी योजनाओं के साथ साथ नयी योजना अर्हं पाठशाला इसका सबूत है, अर्हं पाठशाला तत्त्वज्ञान की सर्जिकल स्ट्राइक है, ये सर्जिकल स्ट्राइक किसी की हिंसा के लिये नहीं बल्कि अपने अज्ञान के अंधकार को समाप्त करने के लिये है, जिसमें हमारे विद्वान डिजिटल मीडियम से आपके घर में आकर (या ये कहूँ घुसकर) आपकी सुविधानुसार आपको और आपके बच्चों को तत्त्वज्ञान पिला रहे हैं।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का यह एक मिशन है, इसमें हमें आपकी आवश्यकता है, हालांकि हमारे विद्वान तत्त्वज्ञान समझाने में, उसे आपके गले उतारने में सक्षम हैं; लेकिन तत्त्वज्ञान सुनने वाले लोगों को तो आपको इनवाइट करना होगा, अगर आप इस जिम्मेदारी को ले लें कि आप अपने रिश्तेदार, नातेदार, मित्र, पड़ौसी को, संसार का अभाव करने के लिये, अनंत सुखी होने के लिये तत्त्वज्ञान समझने की प्रेरणा दे सके हैं तो हम मिलकर लोगों को ये आत्मोपयोगी तत्त्वज्ञान समझा सकेंगे।

अब आपके पास अपने बच्चों को धार्मिक संस्कार न देने के लिये कोई कारण नहीं बचा है, आइये तत्त्वप्रचार के इस महायज्ञ को आगे बढायें।

अर्हं पाठशाला द्वारा आयोजित विश्वस्तरीय ई-शिविर ने जिस तरह से अपनी सफलताओं की चरम सीमाओं को छुआ, जिसकी कल्पना इसकी योजना बनाते वक्त किसी को ना थी, इससे विश्वास हो गया है कि अभी लोगों को तत्त्व समझने की प्यास बहुत है, बस उन्हें सही तरीका चाहिये। तत्त्वप्रचार का स्वर्णिम काल आ गया है, मैं चाहता हूँ कि आप आगे आएं और हमें बताएं कि आप इस यज्ञ में कैसे हमारा सहयोग कर सकते हैं।

– शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर

संकल्प की सार्थकता/इतिहास बदल देती है

बिजली जब चमकती है, तो आकाश बदल देती है।
आंधी जब चलती है तो दिन-रात बदल देती है।।
धरती जब दरकती है तो सीमाएं बदल देती है।
स्मारक की सेना जब गरजती है, तो इतिहास बदल देती है।।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के दूरदर्शितापूर्ण निर्देशन में जिनधर्म की प्रभावना का जो भी कार्य किया, उसने निश्चित ही नया इतिहास बनाया। इसी क्रम में लॉकडाउन की वर्तमान परिस्थितियों में अर्हं पाठशाला द्वारा ऑनलाइन ई-शिविर के माध्यम से 25 देशों में 6 भाषाओं में रजिस्टर्ड 13126 लोगों तक (प्रत्येक रजिस्ट्रेशन में निश्चित ही अनेकों ने लाभ लिया है) आत्महितकारी जिनवाणी को पहुंचाने का प्रशंसनीय कार्य करके पुन: एक नया इतिहास बनाया।

हमारे स्नातक प्रतिवर्ष ही आदरणीय छोटे दादाके जन्म दिवस पर आजीवन तत्त्वप्रचार का संकल्प लेते हैं। ग्रीष्मावकाश में अनेक बाल संस्कार ग्रुप शिविरों के माध्यम से तत्त्वप्रचार में अपना योगदान देते हैं; परन्तु इस वर्ष की परिस्थिति में यह संभव नहीं हो पा रहा था, तब अर्हं पाठशाला के इस महायज्ञ में अपना सहयोग देकर अपने संकल्प को स्नातक बंधुओं ने सार्थक कर दिखाया।

हमारे प्रधानमंत्री मोदीजी ने देश को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दी है, लेकिन हमारे स्नातक तो तत्त्वप्रचार की हर गतिविधि के लिये पूर्व से ही आत्मनिर्भर हैं - यह देखकर आश्चर्य मिश्रित सन्तोष हुआ। इस महाशिविर में 'अथ' से लेकर 'इति' तक प्रत्येक कार्य स्नातक बन्धुओं ने ही अपने वरिष्ठ गुरुजनों व अधिकारीगणों के मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक सम्पन्न कर अपनी आत्मनिर्भरता का परिचय दिया। जिसमें जो भी प्रतिभा थी, उसका संपूर्ण उपयोग करते हुए सभी ने भरपूर सहयोग दिया। इससे यह भी दृष्टिगत हुआ कि हमारे विभिन्न स्नातकों में विभिन्न प्रकार की प्रतिभाएं हैं और वे सभी इसका उपयोग तत्त्वप्रचार के लिये करना चाहते हैं।

'आत्मानुभूति और तत्त्वप्रचार' का जो हमारा संकल्प है, उसे हम सार्थक करें - इसी मंगल भावना के साथ इसमें सहयोग करने वाले सभी को मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

– डॉ. शांतिकुमार पाटील, जयपुर

सह-निर्देशकों की कलम से...

अद्भुत! अकल्पनीय!! अविस्मरणीय!!!

कोविड-19 के इस लॉकडाउन पीरियड में समस्या को अवसर में बदलने का कोई सबसे बढिया उदाहरण यदि हो सकता है तो वह पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित 'अर्हं शिविर'।

जहाँ एक ओर इस आफत ने हमारे मंदिर तक छुड़वा दिये, यह सोच-सोचकर सब लोग परेशान थे, तब टीम अर्हं ने इस आफत को अवसर में बदला और घर में बंद प्रत्येक जिज्ञासु के लिये ऑनलाइन शिविर लगाकर घर में ही मंदिर ला दिया।

यह शिविर इतना बड़ा होगा, इसकी कल्पना शिविर लगाते समय हममें से किसी ने नहीं की थी, परन्तु यह समय का ही असर था कि घर बैठे लोगों को धर्म सीखने का एक मौका लग गया और उनने उसे हाथोंहाथ ले लिया। संभवत: यह शिविर ऐसा शिविर था जिसने वे सभी बाड़ें तोड़ दीं, जिन बाड़ों के कारण अनेक जिज्ञासु तत्त्वज्ञान से जुड़ नहीं पाते थे।

शिविर की सफलता की चर्चा आपने आगे के पेजों पर दिखाई देगी, पर इसका असली रोमांच तो वे ही महसूस कर सके, जो इसका हिस्सा बने। इसके बाद तो मानो ऑनलाइन शिविरों की शृंखला ही चल पड़ी, जो अब अनवरत चलती रहेगी।

ऑनलाइन शिविर को हम तत्त्वज्ञान के क्षेत्र में 'हल्दी लगे न फिटकरी रंग चोखा हो जाये' का व्यावहारिक संस्करण भी कह सकते हैं। आने वाले समय में इसमें और निखार आयेगा। आयोजन की सफलता पूरी टीम की मेहनत का सुफल है। टोडरमल स्मारक के प्रत्येक काम की सफलता का राज उसकी विशाल टीम की एकता, लगन, निष्ठा, समर्पणभाव में छुपा है। यही उसकी सबसे बड़ी धरोहर भी है। अत: सभी को हार्दिक बधाईयाँ! लगे रहें!! तत्त्वज्ञान परोसते रहें। स्वपर हित करते रहें - यही मंगल कामना है।

- पीयूष शास्त्री, जयपुर

अनुभूति को शब्दों में बयां करने की ताकत नहीं

अर्हं पाठशाला द्वारा आयोजित अपने महाशिविर के सफल आयोजन की सभी को बधाई। जहाँ एक ओर समाज के अन्य वर्ग णमोकार मंत्र और भक्तामर के पाठ से ऊपर नहीं उठ पाते, वहीं दूसरी ओर हमारी संस्था ने जैन शासन के मूल सिद्धांतों को घर-घर पहुंचाकर एक ऐतिहासिक कार्य संपन्न किया है। शिविर के आदि से अंत तक के समस्त कार्यक्रमों की शानदार प्रस्तुति और रात्रि के समापन समारोह की गरिमामय प्रस्तुति व भाई पीयूष का सधा हुआ संचालन और सब कुछ शानदार रहा। इसके लिये पूरी टीम को बधाई। साथ ही जिन शास्त्री अग्रजों और अनुजों ने और अन्य अशास्त्री बंधुओं ने इस महायज्ञ में संपूर्ण रूप से अथवा कथंचित्/किंचित् भी आहुति प्रदान की, उन सबके पवित्र परिणामों को नमन।

इस शिविर से एक बात स्पष्ट रूप से ज्ञान में आयी कि राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय विद्वान साथी तो प्रतिभाशाली हैं ही साथ ही अनेक युवा विद्वान बेजोड़ प्रतिभा के धनी हैं। वे अपने स्तर पर पूरे समर्पण के साथ काम कर रहे हैं अथवा कार्य करने को तत्पर हैं, बस उन्हें अवसर की प्रतीक्षा है। अर्हं पाठशाला के समर्पित संचालक युवा साथी बहुत उत्साही हैं और उनका यह समर्पण बहुत प्रसन्नता देता है।

हम सबकी मातृ संस्था पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने अपने विशाल दृष्टिकोण, कार्य करने की पद्धति और समर्पित सेवा के भाव से एक बार फिर दुनिया को बताया कि तत्त्व प्रभावना कैसे की जाती है? और सोनगढ के बाद स्थापित होने वाली मुमुक्षु समाज की शीर्षस्थ संस्था टोडरमल स्मारक के दायित्व का कुशलता से निर्वाह किया है। पूज्य गुरुदेवश्री के द्वारा प्रारम्भ किये गये तत्त्वप्रभावना के पवित्र उद्देश्य की पूर्ति में परम श्रद्धेय छोटे दादा का संपूर्ण जीवन, परम श्रद्धेय बड़े दादा का अहर्निश समर्पण, अन्नाजी, आदरणीय शांतिजी भाईसाहब, परमात्मप्रकाशजी भाईसाहब, जादूगर शुद्धात्मप्रकाशजी और हमारे सबके प्रिय संजीवजी गोधा आदि समस्त गुरुओं का और देश के उन अनेक विद्वानों का भी अभूतपूर्व योगदान है जो अपनी शक्ति, समर्पण और भिन्न परन्तु निर्दोष पद्धति से जैनशासन के सिद्धांतों का शंखनाद कर रहे हैं।

इस महा आयोजन में मुझ जैसे जैन शासन के लघु सेवक को उच्च दायित्व के योग्य समझने के लिये संस्था का आभार और भविष्य में भी मातृ संस्था जो भी योग्य कार्य मुझे प्रदान करेगी उसे मैं पूरे समर्पण के साथ करने का प्रयास करूंगा।

मेरे चित्त में सदा ही जिनशासन को समर्पित व्यक्ति अथवा संस्था के लिये अनुमोदना का भाव रहता है।

जो कह दिया वह शब्द हैं, जो नहीं कह सका वह अनुभूति और अनुभूति को शब्दों में बयां करने की ताकत किसी में नहीं

सदैव आप सबके स्नेह का आकांक्षी...

- विराग शास्त्री, जबलपुर

आवश्यकता आविष्कार की जननी है

कहते हैं आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है, ऐसे ही इस महामारी के काल में जब तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ भौतिकरूप से चलाना कठिन हो गईं और प्रत्यक्षरूप से तत्त्वप्रचार का कार्यक्रम करना कठिन हो गया, लोगों का मंदिर जाना, मंदिरों में पाठशाला चलना बंद हो गया, ऐसी परिस्थिति में वर्षों से तत्त्वप्रचार के क्षेत्र में महारथ हासिल कर चुके पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट और मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा के नेतृत्व में अर्हं पाठशाला ने ई-शिविर लगाने का निर्णय किया। यह वास्तव में एक क्रांतिकारी कदम था, इसने तो प्रचार की गतिविधियों में नया आयाम जोड़ा और अन्य पूरी समाज को भी एक नयी दिशा दिखायी है। हजारों की संख्या में रजिस्ट्रेशन और हजारों प्रतिभागियों का लाभ लेना अपने आपमें सफलता की कहानी दर्शाता है और निश्चित रूप से जब-जब इस कोरोनावायरस को याद किया जायेगा, तब-तब अर्हं पाठशाला के इस ई-शिविर को भी याद किया जायेगा। इसकी पूरी टीम, हमारे सभी विद्वान और पदाधिकारीगण सफलता के लिये बहुत-बहुत बधाई के पात्र हैं।

- धर्मेन्द्र शास्त्री, कोटा

निर्भयता की कला सिखाने वाला शिविर

जब पूरे विश्व में त्राहि-त्राहि मची हुई है, ऐसे समय पर भवतापहारी जिनवाणी को घर-घर तक पहुंचाने के उद्देश्य से अर्हं पाठशाला द्वारा आयोजित ई-महाशिविर एक ऐतिहासिक आयोजन साबित हुआ।

बालक-युवा-प्रौढ-वृद्ध सभी आयु वर्ग के लोगों ने घर बैठे जिनवाणी का रसपान किया और इस भयाक्रांत वातावरण में निर्भय रहने की कला सीखी। महामारी के समय का सदुपयोग इससे बेहतर और कुछ नहीं हो सकता था। लोगों में जिनवाणी के प्रति पूरे विश्व में एक उत्सुकता आयी और लोगों ने अपना समय रचनात्मक कार्य जैसे कि स्वाध्याय, सामायिक, प्रतिक्रमण आदि में लगाया।

अर्हं पाठशाला का आयोजन इतना व्यवस्थित और आकर्षक रहा कि उसके बाद उसी की तर्ज पर अनेक संस्थाओं ने ई-शिविरों का आयोजन करना प्रारम्भ कर दिया। इस शिविर की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इसमें जैनदर्शन के दार्शनिक पक्ष को शिक्षण में शामिल किया गया था, जैसे कि चार अभाव, पुण्य-पाप, आत्मा-परमात्मा, छह द्रव्य, सात तत्त्व, भेदविज्ञान - ऐसे अनेक विषय जो हमें मोक्षमार्ग पर चलने के लिये प्रेरित करते हैं और साक्षात् मोक्षमार्गरूप हैं, ऐसे विषयों का अभ्यासकर जन-जन ने उस सुखद अनुभूति का एहसास किया जो भौतिकता की चकाचौंध में कहीं छिप गयी थी। ऐसे आयोजन उच्च शिक्षा के प्रति समाज में एक नया उत्साह भर देते हैं, जो हमें मुक्ति प्रदान करती है। अर्थकरी विद्या का आयोजन तो सब करते ही रहते हैं, परन्तु जो विद्या हमें मुक्ति प्रदान करे ऐसे आयोजन दुर्लभ हैं। विश्व का बहुभाग इस विद्या से अपरिचित है और संक्लेश में जीवन व्यतीत करने के लिये विवश है। मैं आशा करता हूँ कि अर्हं पाठशाला एक दिन पूरे विश्व में तत्त्वज्ञान को पहुंचाने में समर्थ होगा, यदि वह अपनी शैक्षणिक गुणवत्ता बनाए हुए कार्य करता रहेगा। अर्हं पाठशाला के आयोजकों को, कार्यकर्ताओं को, उसकी पूरी टीम को मैं अनेक साधुवाद देता हूँ कि यह टीम इसी तरह कार्य करती रहे और साथ ही आभार व्यक्त करता हूँ कि सत्पथ फाउन्डेशन को साथ में कार्य करने का अवसर प्रदान किया।

- विपिन जैन शास्त्री, नागपुर (संस्थापक-सत्पथ फाउन्डेशन)

S.O.P. टीम की कलम से...

ये तो सोचा ही नहीं था

सफलता मिलेगी ये तो निश्चित था पर वह सफलता इतनी विशाल होगी ये तो सोचा ही नहीं था, जब देश ही नहीं; अपितु लगभग पूरा विश्व बंद (लॉकडाउन) था, ऐसे समय में आबाल-गोपाल सभी के लिये संस्कार शिविर ने अजब-गजब का कार्य किया। इस शिविर ने बंधनों से मुक्त होने का रास्ता दिखाया।

मेरा हमेशा मानना रहा है कि समस्याओं की एक खासियत होती है कि वह अपने साथ हमेशा नये अवसर लाती है, बस हमें उसे पहचानना आना चाहिये। इसी अवसर को पहचानकर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने और आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी के त्रिशताब्दि जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में जो ई-शिविर का आयोजन किया वह कल्पना से परे (अकल्पनीय) और अद्भुत था।

इस आयोजन में अनेक चुनौतियाँ भी थी, पर सच कहूँ तो चुनौतियाँ न हो तो कार्य करने का मजा भी नहीं आता।

विशुद्ध तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में स्मारक सदैव ही नि:स्वार्थ भाव से आगे रहा है।

यही कारण है कि इस संस्था ने जो भी कार्य किया चाहे वह पंचकल्याणक हो, समयसार विधान हो या यह महाशिविर - समाज को उससे हमेशा तत्त्वज्ञान का लाभ ही प्राप्त हुआ। इसी कारण आज सम्पूर्ण जैन समाज में इस संस्था का एक अलग अनूठा स्थान है। सभी साधर्मी इस अपना मानते हैं तो अन्य जो जैनेतर लोग हैं, जो इस संस्था को जानते हैं, वे लोग इसे जैनों की काशी मानते हैं। जैनों का सबसे बड़ा विद्यापीठ मानते हैं।

हर समय भेदभाव भुलाकर तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार और प्रभावना के कार्य में लगी इस संस्था का ई-शिविर भीइसी में से एक पहल है, जिसने सभी दूरियाँ मिटाकर विपदा के समय में भी घर-घर तत्त्वज्ञान, आत्मकल्याण की सच्ची और अच्छी बात पहुंचाकर उनकी आकुलता ही नहीं मिटायी, अपितु उनको सुखी होने का सही उपाय भी बताया। निर्भय भव: का मंत्र सिखाया।

सच कहूँ तो ऐसा लग रहा था कि सभी साधर्मी एक परिवार हैं। भक्ति, पूजन, कक्षा ने बाल वृद्ध सबको ऐसा बांधकर रखा कि मानो सबका जीवन तत्त्वमय हो गया। 'घर-घर चर्चा रहे धर्म की' उक्ति चरितार्थ कर दी।

अधिक क्या कहूँ, लोगों का लौकिक जीवन भी इस शिविर ने बदल दिया।

जैसे 5 वर्ष का पोता और 60 वर्ष के दादा एक ही लैपटॉप पर बैठकर क्लास पढते थे, सास-बहू साथ में बैठ भक्ति करते थे, पिता-पुत्र आपस में बैठ सांस्कृतिक प्रोग्राम देखते थे। जिस मोबाइल, लैपटॉप ने परिवार में दूरियां बनायी थी, उन दूरियों को उन्हीं साधनों से मिटाने का कार्य इस शिविर ने किया।

साधनों से नहीं, अपितु संस्कारों से जीवन में जीवंतपना आता है।

- डॉ. विवेक शास्त्री, इन्दौर

काल आत्मसाधना में बाधक नहीं

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में अर्हं पाठशाला द्वारा आयोजित जैन ई-ग्रुप शिविर को सफलतापूर्वक सम्पन्न करके युवा विद्वानों ने ये साबित कर दिया कि काल आत्मसाधना में बाधक नहीं है। जहाँ पूरा विश्व महामारी से भयभीत एवं अवसादग्रस्त हो रहा था, वहीं हमारे युवा विद्वानों ने पूरे विश्व में ज्ञान की गंगा बहा दी। इस शिविर में न सिर्फ युवा साथियों की विद्वत्ता दृष्टिगत हुई, बल्कि उन्होंने सामूहिक रूप से जुड़कर परस्पर वात्सल्य, प्रबंधन, इच्छाशक्ति, कठिन परिश्रम एवं तत्त्वप्रचार के प्रति अपने समर्पण भाव का परिचय दिया। पर्दे के पीछे काम करने वाले विद्वानों ने अपनी तकनीकी क्षमताओं का परिचय देते हुए अत्यंत अल्प समय में पूरे शिविर का भागीरथ प्रबंधन इस तरह अपने कंधों पर उठा लिया जैसे किसी कंपनी के उच्च स्तरीय निष्णात हों। आई. टी. टीम के मेन्टर के रूप में मुझे अपने युवा साथियों के साथ काम करने का मौका मिला और सबने मिलकर ''संघे शक्ति कलौयुगे'' की उक्ति को चरितार्थ कर दिया। युवा विद्वानों को दिन में 18-18 घंटे पूरी लगन से काम करते देखकर सभी भावविह्वल हो उठते थे। मैं इस ऑनलाइन शिविर के प्रारूप एवं प्रबंधन को दीर्घ दृष्टि से देखता हूँ तो इसमें भविष्य की पीढियों के लिये तत्त्वप्रचार की असीम संभावनाएं नजर आती हैं और ये विश्वास जाग उठता है कि पंचम काल के अंत तक जिनधर्म जयवंत रहेगा।

- ज्ञायक जैन शास्त्री, मुम्बई

हर हाल में स्वाध्याय करो

जहाँ सारा विश्व आज लॉकडाउन और कोविड-19 से लड़ रहा है, परेशान हो रहा है, दु:खी हो रहा है, जहाँ बाहर महामारी फैली है तो घर में रहते हुए मानसिक पीड़ा का जो वेदन सारी दुनिया कर रही है, उससे कोई अछूता नहीं है, पर एक मुमुक्षु के लिये मेरी नजर में इससे अच्छा अवसर और कभी नहीं आ सकता है।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने जिस रीति-नीति से कार्य किया, उससे सारे विश्व के जैन समुदाय को प्रचार-प्रसार के लिये एक नयी दिशा मिली। जैसा कि हम देख रह हैं, इससे प्रेरणा पाकर आज कई जगह एक के बाद एक शिविरों की परम्परा प्रारम्भ हो गयी। पिछले लगभग 100 दिनों से मुमुक्षु समाज के घर-घर में जो तत्त्वज्ञान की लहर चल पड़ी है, उसका श्रेय यदि किसी को जाता है तो वह पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की छत्रछाया में चल रही ''अर्हं पाठशाला'' को ही जाता है। अर्हं पाठशाला द्वारा लगाया गया यह शिविर आंकड़ों के मामले में भले ही कितना ही बड़ा हो, पर लोगों के जीवन में जो आमूलचूल परिवर्तन हुआ, सैंकड़ों लोगों का जीवन बदल गया, जीवन जीने की दिशा बदल गयी, उसके सामने बौना ही है। शिविर की सफलता और विशालता का पैमाना आंकड़ों से नहीं लोगों के दिशा परिवर्तन से लगाना चाहिये। जिसमें यह शिविर आंकड़ों से कई गुणा ऊपर है। मुझे बहुत खुशी है कि इस अभूतपूर्व क्रांति का मैं भी एक सहयोगी रहा। यद्यपि मैं कई वर्षों से तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार की इस विधा पर कार्य कर रहा हूँ, पर इस तरह की क्रांति पहले कभी देखने में नहीं आयी।

एक बार फिर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने मुमुक्षु समाज की संस्था होने का दायित्व निभाया, जैसे एक घर के मुखिया अपने पूरे परिवार के भरण-पोषण स्वास्थ्य का ध्यान रखता है, वैसे ही इस संस्था ने मुमुक्षु समाज की खुराक (स्वाध्याय) का ध्यान रखा और पूरी समाज को स्वाध्याय से जोड़े रखा। हर कदम पर इस बात का निश्चय कराता रहा - 'जिस देश में, जिस वेश में, जिस हाल में रहो - स्वाध्याय करो, स्वाध्याय करो, बस करते ही रहो।'

- सुदीप शास्त्री, मुम्बई

लॉकडाउन में धर्म हुआ अनलॉक

पूरा देश और दुनिया जब कोरोना वायरस की चपेट में थी, मन्दिर-स्वाध्याय भवन सब लॉकडाउन के चलते बंद पड़े थे, तब दुनिया के एक कोने में स्थित पण्डित टोडरमल स्मारक भवन द्वारा संचालित अर्हं पाठशाला ने दुनिया के कोने-कोने में रह रहे तत्त्वपिपासुओं तक तत्त्वज्ञान को पहुंचाने का बीड़ा उठाया और देखते ही देखते 13000 से अधिक लोगों तक तत्त्वज्ञान और जिनवाणी का सार पहुंचाने का कार्य सफलतापूर्वक किया।

पण्डित टोडरमल स्मारक की छत के नीचे चल रही अर्हं पाठशाला के संयोजन में जब यह कार्य हुआ तो देश-विदेश की संस्थाओं ने बढ-चढकर अपना सहयोग प्रदान किया। जब लोगों के रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ हुए तो किसी को भी यह आशा नहीं थी कि यह आंकड़ा 10 हजार के पार चला जायेगा। लोगों के आशातीत उत्साह को देखकर हमारी टीम भी जोश में आ गयी और न दिन देखा न रात और टीम के एक-एक मेम्बर ने अध्यात्म के वायरस को पूरी दुनिया में फैलाने के लिये जी-जान लगा दी।

शिविर के प्रारम्भ में लगा कि 13000 लोगों को वर्चुअल माध्यम से कैसे जोड़े रखेंगे, छोटे-छोटे से बच्चों के उत्साह, रुचि, धैर्य व लगन देखकर हम हैरान होने के साथ अत्यंत प्रसन्न थे कि अब जैनधर्म को पंचम काल के अंत तक ले जाने से हमें कोई नहीं रोक सकता।

इस ऐतिहासिक ई-शिविर के सफल आयोजन से हम यह भी सिद्ध करने में सफल हुए कि जिद और जज्बा हो तो हम कैसी भी स्थिति में जैनधर्म के ध्वज को फहराते रहेंगे। लेकिन हमें यहाँ नहीं रुकना है, यदि जैनधर्म के ध्वज को निरंतर फहराते हुए देखना है तो तत्त्वज्ञान से सदैव जुड़े रहना होगा, तभी हम एक स्वर में कह सकेंगे - सर्वज्ञ शासन जयवंत वर्तेनिर्ग्रन्थ शासन जयवंत वर्ते।

- प्रतीति मोदी शास्त्री (चीफ एग्जीक्यूटिव - अर्हं पाठशाला)

अनेकों संस्थाओं की एकता का माइल स्टोन अर्हं महाशिविर

जिन्दगी ने भागना शुरु किया और हम सब भी बिना सोचे समझे भागते गए, लेकिन एक भी बार हम सबने तबीयत से अपने बारे में थोड़ा-सा भी विचार नहीं किया। आखिर हम सब कर क्या रहे हैं? क्यूं कर रहे हैं? कैसे कर रहे हैं? परन्तु इस भीषण कोरोना काल में, हम सबके प्रश्नों के उत्तर के रूप संजीवनी की तरह आया 'अर्हं शिविर'। इस शिविर ने कितनी ही पहेलियों को सुलझा दिया, कितनों ही को सही राह दिखला दी।

एक ऐसा शिविर जिसने हजारों परिवारों को जीना सिखा दिया, कितने बच्चों को असली जैनी बना दिया और हाँ कितने ही अजैनों को जैनधर्म सिखा दिया। शिविर संबंधी मेरा स्वयं का अनुभव है कि जब कोरोना काल में दुनिया की सांस रुक-रुककर चल रही है, लोग शक्तिहीन और दयाहीन हो रहे थे, तब अर्हं शिविर आत्मा की अनंत शक्तियों, जिनवर के उपदेशों व भक्तियों के माध्यम से दुनिया को सिर्फ सांस लेना ही नहीं, अपितु निर्भय, अविनाशी, असली जीवन के बारे में और उसके जीने के तरीकों के बारे में, लोगों के घरों में जा-जाकर बतला रहा था। इसके माध्यम से एक और महत्वपूर्ण बात पता चली कि जो हुआ सो हुआ अब क्या कर सकते हो? उज्ज्वल भविष्य की खबर आपको अर्हं शिविर ने बतला दी है, अब रुकना नहीं, अब झुकना नहीं, अब बहाने नहीं बनाना, क्योंकि यह सिर्फ वर्तमान का सवाल या समस्या नहीं है, अपितु जीवन के अनन्त काल के लिये भी तो कुछ इंतजाम करना पड़ेगा। अब उठ जाओ, जाग जाओ यही समय है आगे बढने का, अपने कल्याण करने का।

अर्हं शिविर ने अनेकों संस्थाओं की एकता का माइलस्टोन बनाया है जो भविष्य में इस शिविर से भी विशाल रूप में विश्व को एकता शक्ति का पाठ पढाएगी। विशाल टीम के सहयोग और सामंजस्य से अर्हं पाठशाला भविष्य में अपने मार्गदर्शकों और निर्देशकों के साथ नये कीर्तिमान स्थापित करने के बारे में प्रयत्नशील है। दुनिया का सबसे बेहतरीन काम, अपने आपको जानना और उस ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाना है और इस काम को अर्हं पाठशाला बखूबी से निभा रही है। अर्हं टीम ने जैनधर्म के शौर्य की कथाओं और गाथाओं का गान करने का बीड़ा उठाया है। अर्हं पाठशाला की बांसुरी की आवाज लोगों के मन मस्तिष्क में बहुत अच्छे से समा रही है। अर्हं पाठशाला दुनिया की सोच के साथ नहीं; अपितु दुनिया की सोच के आगे चल रही है और हमेशा आगे चलती रहे - ऐसी मेरा भावना है और मेरी टीम का विश्वास है।

- अर्पित शास्त्री, ललितपुर (एक्जीक्यूटिव-अर्हं पाठशाला)

नजर बदलो तो नजारे बदल जाते हैं

नजारे को बदलना था, एक नजर की जरूरत थी, वो नजर बना अर्हं पाठशाला। जब चारों ओर लोग बस कोरोना-कोरोना कर रहे थे, तब तत्त्वज्ञान की क्रांति लेकर आई अर्हं पाठशाला। यह एक क्रांति का आगाज है, जो अब थमने वाला नहीं है, सच में जब लोग सोच रहे थे कि लॉकडाउन में क्या करेंगे, जब लोगों के माथे पर चिंता की रेखाएं थीं, तब पूरे देश-विदेश के वातावरण में अध्यात्म-क्रांति की मूसलाधार बारिश हुई, जिसका नाम था अर्हं जैन ई-ग्रुप महाशिविर। इस बारिश से कोई नहीं बच पाया, चाहे बालक हो या बुजुर्ग, नजारा देखने लायक था। जब भी 3 साल के बच्चे और 80 साल के उनके दादाजी को स्क्रीन पर देखता था तो पूरी थकान गायब हो जाती थी। आदरणीय छोटे दादा द्वारा प्रेरित इस शिविर में मैं हमेशा उनके साथ रहा और जब देखा कि दादा शिविर के एक-एक कार्यक्रम को देखते हैं और प्रसन्न होते हैं, तो अपने आपको सबसे पुण्यवान महसूस करता था। इस शिविर ने लोगों के दृष्टिकोण को भी बदला है, जो लोग समझते थे कि धर्म तो आउट ऑफ डेट है, उनके लिये धर्म ही सबकुछ हो गया है। शिविर में 13000 लोगों ने रजिस्ट्रेशन कराये थे, तब हमारी टीम दिनरात एक करके लग गई। इस अवसर पर सुदीपजी, प्रतीति दीदी, अर्पितजी, अनुभवजी, ज्ञायकजी, विवेकजी, समकितजी, आप्तजी आदि कुछ लोगों का उल्लेख अवश्य करना चाहूंगा, जिनके बिना शिविर की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। अब विराम लेता हूँ। ''रक्त की एक बूंद जब तलक रहे इस देह में, तत्त्वज्ञान प्रचार-प्रसार करता रहूँ इस गेह में''।

- आकाश शास्त्री, अमायन

पावर हाउस है टोडरमल स्मारक...

अर्हं पाठशाला द्वारा यह जो महाशिविर लगा इसका हिस्सा बनना एक अपूर्व अवसर था। आदरणीय बड़े दादा के देह परिवर्तन के बाद से ही शुद्धात्मप्रकाशजी और आकाश के साथ अर्हं पाठशाला द्वारा एक ग्रुप शिविर लगाने का विचार बन रहा था, परन्तु फिर लॉकडाउन की परिस्थिति बनी, सारे देश की गतिविधियाँ स्थगित हो गईं, फिर जो नहीं रुका वह था तत्त्वज्ञान को घर-घर पहुंचाने का अर्हं पाठशाला का संकल्प, हमने पहले छोटे-बड़े सभी के लिये अलग-अलग विषयों के सेमिनार आयोजित किये, जिसमें ही हमारी संख्या लगभग 1000 से अधिक हो गयी और इससे हमें बल मिला महाशिविर के आयोजन का।

फिर क्या था, धीरे-धीरे यह उत्साह और योजना बढती गयी एवं शिविर की तारीख भी समिति द्वारा निश्चित कर दी गयी। इसप्रकार शुरुआत हुई इस महाअभियान की। इस महाशिविर के उद्देश्य आत्मानुभूति और तत्त्वप्रचार पहले की तरह स्पष्ट ही थे, परन्तु रूपरेखा और कार्य-योजना निर्धारण समिति का हिस्सा बनना मेरे लिये अहम था।

तत्त्वप्रचार के किसी भी कार्य का हिस्सा बनने में जो ऊर्जा का संचरण स्मारक से होता है, वह अद्भुत है, इसका तो स्मारक मानो पावरहाउस है। ना दिन-रात, ना भूख-प्यास - किसी का भी विचार किये बिना बस काम में ही लगे रहना और कमजोरी महसूस ना होना, यह सिर्फ स्मारक के कार्य करते समय ही सम्भव है। इसी के साथ-साथ इतने अधिक साधर्मियों का जुड़ना, सभी कार्यक्रमों का व्यवस्थित संचालन होना एवं इसी उत्साह से महाशिविर का सफल होना निरंतर उत्साह को बढाने वाला रहा। इससे आगे भी ऐसे आयोजन का हिस्सा बनने की प्रेरणा मिली।

- समकित शास्त्री, खनियांधाना

आज का अंत हमारी अगली शुरुआत है

दुष्यंत की गजल की ये पंक्तियाँ पण्डित टोडरमल स्मारक की अनजान क्रांति को व्यक्त करने के लिये सटीक हैं। आदरणीय छोटे दादा डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के जीवनश्रम ने एक ऐसा तूफान जैनजगत में उत्पन्न कर दिया, जिसका प्रभाव आने वाले कम से कम 1000 वर्ष से अधिक समय तक तो विश्व में प्रभावी रहेगा ही रहेगा। यूं तो इसकी वर्तमान तीव्रता इसके थमने का कोई भी इशारा नहीं करती, किन्तु फिर भी समय तो समय ही है।

वर्तमान ही हमारी सफलता का पैमाना है और यही हमारे भविष्य का सूचक। टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने जैन जगत में जितना भी कार्य किया हो उसका बहुधा श्रेय पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय को जाता है। ट्रस्ट ने स्थान तैयार किया बापूनगर जयपुर में, किन्तु महाविद्यालय ने स्थान को विस्तार दिया सम्पूर्ण विश्व में।

आज इसका क्या विस्तार है, यह कोई प्रदर्शन की बात नहीं है, अपितु जहाँ-जहाँ आत्मा की बात हो रही है, वह सब कुछ टोडरमल स्मारक का अंग ही है और आने वाली शताब्दियाँ भी इसकी नींव पर ही अपना निर्माण करेंगी।

कोरोना वायरस (कोविड-19) भले ही अभिशाप के रूप में आया हो, किन्तु यह धार्मिक क्षेत्र में किसी वरदान से कम नहीं है। साथियों कोविड-19 तो कुछ ही दिनों में चला जायेगा, किन्तु आपने जिस तत्त्व की खोज इन बीते 7 दिनों में की है, वह आपके सम्पूर्ण जीवन को एक नयी दिशा देने में समर्थ है।

आज सीवन को उधेड़ो तो जरा देखेंगे।
आज संदूक से वो खत तो निकालो यारों।।
कैसे आकाश में सुराख नहीं हो सकता।
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारों।।

एक फोन कॉल के साथ इस शिविर की रूपरेखा को प्रस्तावित किया गया था और बढते-बढते यह 14000 की निश्चित संख्या और ना जाने कितनी अनिश्चित संख्या तक विस्तार को प्राप्त हो गया। संजीवजी भाईसाहब के साथ जिस दिन इसकी रूपरेखा पर एक अनौपचारिक चर्चा की गई थी, उस दिन हमारा अनुमान 3000 बच्चों की संख्या तक सीमित था, फोन कॉल के बीच में ही यह संख्या हम सभी ने 5000 तक कर ली और जब आदरणीय शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल से एक वीडियो बनाने को कहा गया तो उन्होंने इस संख्या को 10,000 तक निज दृढसंकल्प के आधार से घोषित कर दिया। हम सभी तनिक हिचकिचाए कि यदि कदाचित् हम इस संख्या तक नहीं पहुंच सके तो फिर क्या होगा?

किन्तु टोडरमल स्मारक जिस कार्य को अपने हाथों में लेता है, उसे सफलता का भय स्वभाव से ही नहीं होता। परिणाम क्या रहा यह सब आप सभी जानते ही हैं।

टीम ने जिस तरह से यह कार्य किया है, इसकी आप सभी कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। शिविर के शुरुआती दिनों में तो सपने में भी कॉल ही आया करते थे।

ऐसे न जाने कितने ही सपने शिविर शुरू होने के पहले आए होंगे। शुरुआती कुछ दिनों में टीम छोटी थी, जिसके कारण काम का जोर अधिक और समय कम था। इस दृष्टि से टीम का विस्तार किया गया और एक विहंगम समूह निस्पृह कार्यकर्ताओं का तैयार हो गया, जिनके अथक प्रयासों से यह शिविर अपने समस्त प्रारूपों पर खरा उतरा।

यूं तो आभार और स्मृतियाँ अनगिनत सी बन गयी हैं, किन्तु आदरणीय दादा का नामोल्लेख किए बिना यह मन संतप्त ही बना रहेगा। दादा पिछले 60 दिनों से मानो अत्यंत ही युवा सरीखे हो गए हैं, प्रतिदिन प्रवचन, गोष्ठियों की सहभागिता, शिविर में कक्षाओं का निरीक्षण इत्यादि न जाने कितने ही कार्य बिना किसी थकावट के उत्साहपूर्वक कर रहे हैं। हम जैसे वृद्ध स्नातकों को अतियुवा दादा एक प्रेरणा हैं, सोच हैं, उपलब्धि हैं और वो सब कुछ हैं, जो कुछ भी तत्त्वज्ञान के क्षेत्र में किया जा सकता है।

बस यही दादा के जीवन का सार है, जो प्रत्येक व्यक्ति के लिये रत्न समान महत्वपूर्ण है।

दुष्यंत की कुछ और पंक्तियाँ लिखकर इस बात को विराम देता हूँ-

मेरे गीत तुम्हारे पास सहारा पाने आएंगे।
मेरे बाद तुम्हें ये मेरी याद दिलाने आएंगे।।
थोड़ी आंच बनी रहने दो, थोड़ा धुआं निकलने दो।
कल देखोगी कई मुसाफिर इसी बहाने आएंगे।।

– अनुभव शास्त्री, खनियांधाना

अद्भुत! अकल्पनीय!! अविस्मरणीय!!!

अर्हं पाठशाला द्वारा आयोजित जैन ई-ग्रुप शिविर जो दिनांक 10 से 17 मई तक संचालित हुआ, जो अनेक सफलताओं से पूर्ण हुआ। यह एक ऐसा ऐतिहासिक भव्य आयोजन था जो आगे आने वाले अनेक वर्षों तक स्मरण किया जायेगा।

इस विपत्ति के काल में भी हजारों की संख्या में साधर्मीजनों ने तत्त्व को गहराई से समझा और लाभ लिया। अब इस शिविर की प्रेरणा से अनेक शिविर भी संचालित हो गये।

ऐसा आयोजन निरंतर होता रहे, जिससे तत्त्वपिपासु जीवों को लाभ मिलता रहे।

– विनीत शास्त्री, मुम्बई

प्रभारियों की कलम से...

ऐतिहासिकता की पराकाष्ठा

ऑनलाइन फ्लैटफार्म में अर्हं पाठशाला का कार्य शुरू से ही उल्लेखनीय रहा है। कोरोना महामारी के संकट की घड़ी में जब विश्वभर के लोग घरों में बंद हैं, चिंता में हैं - ऐसे समय में निश्चित तौर पर धर्मचिन्तन ही उपाय है। अर्हं पाठशाला द्वारा आयोजित ई-शिविर ने ना केवल इस उपाय को पूरा किया, अपितु विश्वभर में अनेकों ई-शिविरों के आयोजन की प्रेरणा भी दी। फलस्वरूप आज अनेकों ई-शिविर आयोजित किये जाने लगे हैं। किसी स्थान विशेष पर शिविर लगाते तो शायद ज्यादा लोगों तक नहीं पहुंच पाते, लेकिन ई-शिविर से विश्व के कोने-कोने तक पहुंच गये हैं। जहाँ एक ओर लोग मंदिरों के बंद हो जाने से चिंता में थे, वहीं इस ई-शिविर से घर में समवशरण को पाकर खुशी से झूम उठे। उपरोक्त तथ्यों पर गहराई से विचार करने पर पता चलता है कि अर्हं पाठशाला द्वारा आयोजित यह ई-शिविर ऐतिहासिकता की पराकाष्ठा है।

मैं इस शिविर में तमिल शिविर के प्रभारी, अध्यापक एवं हिंदी प्रान्त के शिविर में अध्यापक के तौर पर कार्य करके अत्यधिक प्रसन्न हूँ। शिविर के सफल संयोजन के लिये पूरी टीम को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई!

''इरादों में तत्त्वप्रचार और संकल्पित मन यदि हमारा है
तो आओ बुलन्दियों को छुएं, क्योंकि भावी इतिहास हमारा है''

- जिनकुमार शास्त्री (उपप्राचार्य-श्री टोडरमल दिग. जैन सि. महाविद्यालय, जयपुर)

उत्साह भरा फोन कॉल

बात उस दिन की है जब भोजनोपरांत विश्राम के लिये बैठा ही था कि अर्हं पाठशाला की ओर से जयपुर से आकाश शास्त्री का फोन आया और उन्होंने अर्हं पाठशाला द्वारा लगभग दो सप्ताह बाद आयोजित होने वाले ई-ग्रुप शिविर के बारे में जानकारी दी। जानकारी देने का जो लहजा था वह वास्तव में बहुत ही हर्ष और उत्साह से भरा हुआ था। अन्तिम वाक्य में उन्होंने मुझसे कुछ मांग लिया। मुझे मध्यप्रदेश का प्रभार सौंपने की बात बतायी। मुझे इस तरह इस शिविर से जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आई.टी. के मामले में बहुत ज्यादा जानकार तो नहीं था, पर हमारे बेटे शाश्वत ने इस मामले में पूरा सहयोग किया। प्रथम पुष्पेन्द्रजी भिण्ड व अन्य साथियों के सहयोग से मोबाइल पर वाट्सएप ग्रुप निर्मित कराया। समूचे मध्यप्रदेश के अनेक स्थानों के लोगों को जोड़ा गया। फिर अर्हं पाठशाला के द्वारा प्राप्त प्रचार सामग्री को सभी ग्रुप सदस्यों द्वारा आगे फॉरवर्ड कराया गया। सभी प्रभारियों द्वारा सुबह-शाम अपडेट मेसेज भेजे गये कि आपको क्या और कैसे करना है। अन्ततोगत्वा एक ग्रुप कम पड़ गया। द्वितीय ग्रुप का निर्माण करना पड़ा। प्रतिदिन ज़ूम एप के माध्यम से मध्यप्रदेश के सभी एक-एक प्रभारी से बार-बार बात करने की कोशिश की। सभी की समस्याओं के समाधान जो संभव हो सके, किये। इतना सब होने पर बेहद प्रसन्नता हुई, जब रजिस्ट्रेशन बन्द हो गये और मध्यप्रदेश के अनेक लोगों के फोन आने लगे कि कैसे भी करके मेरा रजिस्ट्रेशन कराइये। आप करा सकते हैं, क्योंकि आप मध्यप्रदेश के प्रभारी हैं। आपके हाथ में सबकुछ है। पर मेरे हाथ में सबकुछ नहीं था, लेकिन ऐसे उत्साही लोगों के लिये पुन: रजिस्ट्रेशन लिंक खोली गयी। उत्साह को देखकर मुझे भी बहुत प्रसन्नता हो रही थी कि ई-शिविर न जाने किस मुकाम पर पहुंचने वाला है। शिविर शुरु हुआ पुन: मैसेज मिला कि आपको कक्षाओं का निरीक्षण करना है। कक्षाओं के निरीक्षण में भी पढाने वाले प्रत्येक शास्त्री विद्वान साथी जो शिविर में शिक्षण कार्य कर रहे थे। हर दूसरे शिक्षक में एक नयी चेतना का संचार पाया। निर्देशानुसार तो सारे कार्य निष्पादित हो ही रहे थे। सभी विद्वान अपनी ओर से कुछ नवाचार के साथ श्रोताओं का मन मुग्ध किये हुए थे। शिविर समापन के समय छोटे दादा सहित अनेक विद्वानों व श्रेष्ठियों के उद्गार बहुत ही प्रासंगिक थे। बहुत अच्छी तैयारियाँ थी। जैसा कि समापन समारोह में देखा इस पवित्र कार्य में अनेक साथियों की बहुत अहम् भूमिका थी और उन सभी ने बहुत ही बखूबी उसे निभाया भी। मन करता है उन सभी साथियों की प्रत्यक्ष पीठ थपथपाऊं, शाबासी दूं। जिनके अदम्य साहस ने वह कर दिखाया जो इतना आसान भी न था और सम्भव भी नहीं। उन सभी की मेहनत और लगन ने उसे आसान कर दिखाया। मध्यप्रदेश फैडरेशन की ओर से, शास्त्री विद्वान संगठनों की ओर से, सभी प्रभारियों की ओर से समयसार विद्यानिकेतन ग्वालियर की ओर से सभी का पुन: आभार व्यक्त करता हूँ। मुझे भी गर्व है कि इस ऐतिहासिक ज्ञान के इस महायज्ञ की एक कड़ी बनकर कार्य करने का अवसर मिला। धन्यवाद! जय-जिनेन्द्र।

- शुद्धात्मप्रकाश शास्त्री, ग्वालियर

भवतापहारी शिविर

अनादि तीर्थंकरों की मंगलवाणी दिव्य देशना को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर घर-घर में जाकर हृदयंगम कराने हेतु अर्हं पाठशाला द्वारा अन्य सहयोगी संस्थाओं के माध्यम किए गये इस पुनीत कार्य को शब्दों में व्यक्त करना नि:संदेह अशक्य है।

इस विषम परिस्थिति में आबाल वृद्ध तक सभी को भवतापहारी जिनवाणी माँ के अमृतमयी वचनों से लाभान्वित करना निश्चित ही भव के अभाव में निमित्त बनेगा। मुझे भी इस तत्त्वज्ञान के महायज्ञ में 'तारण समाज स्टेट प्रभारी' के रूप में दायित्व प्रदान करने हेतु आपका हृदय की गहराईयों से आभार व्यक्त करता हूँ। निश्चित ही तत्त्वप्रचार की अन्य गतिविधियों हेतु आप मुझे भविष्य में भी अवसर प्रदान करेंगे, इसी भावना के साथ...।

- सचिन शास्त्री बरेली (भोपाल)

प्रात: कालीन जिनेन्द्र पूजन

आध्यात्मिक संगीतमय भक्ति

कक्षाएँ पढ़ाते हुए अध्यापकगण

अतिथि उद्बोधन

भव्य समापन और पुरस्कार वितरण समारोह

अद्भुत और आश्चर्यकारी था एक्टिविटी महोत्सव

महाशिविर में प्रतिदिन शिविरार्थियों को सभी आयुवर्ग के अनुसार अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं रोचक एक्टिविटी दी जाती थी, जिसके अन्तर्गत अतीत के झरोखे, स्लोगन मेकिंग, हमारे जैन सिद्धांत, महाशिविर न्यूज रिपोर्टिंग आदि एक्टिविटी आयोजित की गईं।

क्या रहा शिविर...?

सभी शिविरार्थियों ने सम्पूर्ण लॉकडाउन के समय में भी उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करके इतनी अद्भुत प्रस्तुतियाँ दी, जिन्हें बार-बार देखने का मन आज भी करता है। अतीत के झरोखे एक्टिविटी में हमें सैंकड़ों की संख्या में प्रस्तुतियाँ प्राप्त हुईं जो महापुरुषों के जीवन पर आधारित थीं। इसमें खुशी इस बात की हुई कि छोटे-छोटे बच्चों ने यशोधर मुनिराज, सती चन्दनबाला, सती अनन्तमती, पण्डित टोडरमलजी, पण्डित दौलतरामजी, आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल आदि अनेक महापुरुषों के जीवन आधारित प्रसंग प्रस्तुत तो किये ही, साथ ही उन सभी ने इन महापुरुषों के बारे में जाना भी। इसप्रकार हम इस एक्टिविटीके माध्यम से सैंकड़ों बच्चों को महापुरुषों से परिचित करा सके, हमारे जैन सिद्धांत एक्टिविटी के माध्यम से बच्चों ने उन जैन सिद्धांतों को याद किया - यह इनकी सार्थकता थी। इसप्रकार सभी एक्टिविटी ज्ञानवर्धक रहीं। इनमें शौर्यका चौधरी, आविक जैन, शुद्धि जैन, उपदेश जैन, सिद्धांश जैन, मेहक शाह, सम्प्रति जैन, मेघान्श जैन आदि अनेक बच्चे आकर्षण का केन्द्र रहे। एक्टिविटी विदुषी सर्वदर्शी भारिल्ल के संयोजन एवं पण्डित जिनेन्द्र शास्त्री, पण्डित कार्तिक शास्त्री, सिद्धार्थ शास्त्री के संचालन में आयोजित की गई। सभी एक्टिविटी अर्हं पाठशाला फेसबुक पेज पर अपलोड की गईं।

- प्रतीति मोदी शास्त्री (एक्टिविटी प्रमुख)

संस्कारों का महाकुंभ : अर्हं शिक्षण शिविर

आयोजक मण्डल को कोटिश: बधाई!

कोरोना संक्रमण काल सकल जैन समाज के लिये एक अपूर्व अवसर लेकर आया, आत्मचिंतन-मनन के साथ स्वपरीक्षण का। हमने अपने जीवन में कितना पढा, सुना एवं तत्त्वाभ्यास किया, उसे समाज के साथ भारत सहित सम्पूर्ण विश्व को लौटाने का।

कुछ अच्छा करने का विचार कर ही रहा था कि पता चला कि टोडरमल स्मारक के तत्त्वावधान में अर्हं पाठशाला द्वारा अन्तरराष्ट्रीय संस्कार शिविर का आयोजन दिनांक 10 से 17 मई तक किया जाना है। जो विश्व की सकल जैन समाज के लिये है।

मस्तिष्क में एक नयी ऊर्जा आ गयी, क्योंकि दिमाग को कोई विषय चाहिये था, जो विश्वस्तर का हो और सहज ही बिना किसी के कहे-सुने लग गया जिनशासन की मंगल प्रभावना में।

प्रिय अनुज आकाशजी शास्त्री से बात हुई कि भाई स्मारक के दो बेटे हैं एक बेटा अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन और दूसरा अर्हं पाठशाला।

अगर परम आदरणीय छोटे दादा श्रद्धेय डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल साहब की अनुमति हो तो अन्तरराष्ट्रीय ज्ञानयज्ञ में प्रचार-प्रसार के लिये लग जाऊँ।

जैसे घर के वैवाहिक कार्यक्रम में एक बेटी का पिता अथवा भाई जी-जान से तैयारी करता है कि पूरी समाज में सबसे अच्छा मांगलिक कार्यक्रम मेरे यहाँ का हो, कोई भी साधर्मी छूट न जावे, सभी को हाथ जोड़कर विनय भावपूर्वक सिर्फ आमंत्रण देता है कि सपरिवार पधारो साहब, हमारे घर आंगन में उत्सव आया है।

इसी प्रकार मैं शिविर के आमंत्रण में तन-मन-धन से लग गया। स्मारक बातें होती रहीं और प्रतिदिन नयी-नयी खबरें बनाकर मीडिया को परोसता रहा और वे छापते रहे।

प्रेरणा मिलती रही आदरणीय भाईश्री संजीवजी गोधा, पीयूषजी शास्त्री, सुदीपजी शास्त्री मुम्बई, आकाशजी शास्त्री, कार्तिकजी शास्त्री के साथ स्मारक की पूरी टीम से। जैसे ही पता चला कि रजिस्ट्रेशन का आंकड़ा 13,000 के पार हो गया और पहुंच गया 13,126 पर, तो खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मीडिया में लिखा कि 25 देशों के 13126 विद्यार्थी 6 भाषाओं में पढेंगे जिनशासन के साथ नैतिक शिक्षा, सदाचार, शाकाहार का पाठ, 300 युवा विद्वान कराएंगे अध्ययन, सुबह-दोपहर-रात्रि - तीनों समय बहेगी अध्यात्म की गंगा, पूरा विश्व सीखेगा अहिंसा परमो धर्म का पाठ।

मीडिया को प्रमाण चाहिये था कि क्या प्रमाण है 25 देश और 13126 विद्यार्थी 6 भाषाओं में अध्ययन करेंगे। मैंने तुरन्त ही आई.टी. विशेषज्ञ भाईश्री सुदीपजी शास्त्री मुम्बई को फोन लगाया और निवेदन किया कि मुझे वे सभी सामग्री चाहिये जो प्रमाणित करती है कि 25 देश, 6 भाषाएं और 13126 की सभी संख्या सत्य है।

श्री सुदीपजी ने तुरन्त ही एक शासकीय प्रोजेक्ट के जैसे पूरा डेटा उपलब्ध कराया। मैंने समाचार के साथ पूरी जानकारी मीडिया को मेल की। मीडिया सहित सभी को खुशी हुई कि पूरे विश्व में भारत की अहिंसा एवं अध्यात्म पहुंच रहा है। इसका पूरा श्रेय जाता है टोडरमल स्मारक की पूरी टीम को। विशेष रूप से परम आदरणीय छोटे दादाश्री को, जिनकी मंगल प्रेरणा एवं मेहनत आज अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के लिये वटवृक्ष का कार्य कर रही है। दादाश्री मुझे आप पर एवं स्मारक पर गर्व है।

कोरोना संक्रमण काल में पूरे विश्व में जो धर्म प्रभावना स्मारक के माध्यम से अर्हं पाठशाला एवं युवा फैडरेशन ने की है और चल रही है, वह युगों-युगों तक जानी जायेगी।

मुझे जिनशासन की मंगल प्रभावना का अवसर स्मारक द्वारा दिया गया, जिसके लिये मैं स्मारक का हृदय से आभारी हूँ।

प्रचार-प्रसार में छिन्दवाड़ा सहित सम्पूर्ण देश के इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट मीडिया का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ, उन सभी सम्माननीय समाचार पत्र, सम्पादकों सहित प्रेस फोटोग्राफरों के साथ सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त करता हूँ। जिनशासन की मंगल प्रभावना में मेरे द्वारा कोई अविनय या त्रुटि हुई हो तो आप सभी विद्वत्जन मुझे क्षमा करते हुए भविष्य में भी जिनशासन की मंगल प्रभावना का अवसर प्रदान करेंगे।

इसी पवित्र भावना के साथ....

जिनशासन सेवक....

- दीपकराज जैन, छिन्दवाड़ा (प्रान्तीय मीडिया प्रभारी, अ.भा. जैन युवा फैडरेशन मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ)

अध्यापकों की कलम से...

शिविरों का अनूठा रूप : ई-शिविर

अनेक जैन मुमुक्षु संस्थाओं के तत्त्वावधान में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित अर्हं पाठशाला ने शिविरों का एक अनूठा रूप हम सबके सामने लाकर खड़ा कर दिया है।

जैन ई-ग्रुप शिविर की भव्यता इस बात का प्रतीक है कि पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा किये जा रहे तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार की गूंज कितनी दूर तक है! कितनी मजबूत है! और कितनी ऊँची है!

जैसे जीव द्रव्य का एक क्षेत्रावगाही शरीर अचेतन होने पर भी उस पर देखने, जानने, छूने, चखने, सोचने, दिल लगाने का आरोप आ जाता है, उसी प्रकार हम-आप बड़े ही सौभाग्यशाली हैं कि इस तत्त्वज्ञान की लहर का एक छोटा-सा हिस्सा बनकर हम भी महान हो गये हैं, उसके अधिकारी हो गये हैं। अब तो उस प्राप्त तत्त्वज्ञान को कण-कण तक पहुंचाना हमारी जिम्मेदारी है।

इस शिविर की सफलता को इतना भव्य बनाने हेतु आप सभी को कोटिश: धन्यवाद और इस सत्प्रयास हेतु संयोजकों एवं आयोजकों को कोटिश: साधुवाद!

- डॉ. स्वर्णलता जैन, नागपुर

एक नयी परम्परा का शुभारम्भ

अर्हं पाठशाला का यह ई-शिविर निश्चित ही अविस्मरणीय एवं अद्वितीय रहा। अविस्मरणीय इसलिये नहीं कि इसमें सहस्राधिक रजिस्ट्रेशन हुए या शताधिक अध्यापकों द्वारा अध्ययन कराया गया, किन्तु यह अविस्मरणीय इसलिये था क्योंकि धर्मप्रभावना की गंगा इस बार किसी एक क्षेत्र में सीमित ना रहकर देश-विदेश में बही और जीवों को आत्मानुभूति के रस में भिगोया।

जिसप्रकार श्रुत परम्परा का अंत निकट देख आचार्यों ने जिनवाणी को लिपिबद्धकर तत्त्वप्रचार को नयी दिशा प्रदान की, उसीप्रकार आज के दौर में जब लोगों का जिनवाणी के पास आना असंभव सा लग रहा था, तब इस ई-शिविर ने घर-घर जिनवाणी को पहुंचाकर तत्त्वप्रचार की उस पावन परम्परा में एक नयी कड़ी जोड़ी; अत: यह शिविर अद्वितीय रहा।

अर्हं पाठशाला के जन-जन में तत्त्व का प्रचार करने के इस प्रयास से स्वयं में भी तत्त्व का प्रचार हुआ, यह मेरे लिये व्यक्तिगत रूपसे अमूल्य लाभ था।

– शाश्वत जैन भोपाल (शास्त्री प्रथमवर्ष)

ई-शिविर या समवशरण

अर्हं पाठशाला एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित जैन ई-महाशिविर वास्तव में एक विश्वस्तरीय शिविर रहा। इस शिविर ने भगवान महावीर के तत्त्वज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने में समवशरण समान ही कार्य किया, जिसमें सैंकड़ों विद्वानों ने गणधर के समान लोगों को जिनवाणी का रसपान कराया। इस शिविर में देश-विदेश के अनेक बच्चे, बड़े और बूढे सभी ने समवशरण के समान हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी, कन्नड, तमिल जैसी अपनी-अपनी भाषाओं में चारों अनुयोगों के विषयों को अत्यंत सरलता और रोचकता से समझा। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वप्रचार-प्रसार की विजय गाथाओं में एक और ऐतिहासिक कार्यक्रम जुड़ चुका है, आशा है इसी तरह यह धारा अनवरतरूप से चलती रहेगी।

– अमन शास्त्री, दिल्ली

तत्त्वज्ञान का रसपान करें

अर्हं पाठशाला द्वारा आयोजित यह जैन ई-ग्रुप शिविर बहुत ही अनूठा, आकर्षक एवं सफलतम प्रयास रहा है।

यह शिविर बालक, पालक, युवा, वृद्ध सभी की सीमाओं को पार कर, लौकिक-सामाजिक-धार्मिक-आध्यात्मिक विचारों को पोषकर अत्यंत लाभप्रद रहा है।

अध्ययन बहुत होने पर भी उसकी जड़ें तभी मजबूत होती हैं, जब आप उन विषयों को जीते हैं। जितना-जितना आप उन्हें अपने वर्तमान जीवन में उपयोगी बनाते हैं, उतना-उतना वे आपके अन्तस्थ में स्थान प्राप्त करते हैं। मैंने तो यह पाया है; अब आप भी इस प्राप्त तत्त्वज्ञान को जन-जन तक पहुंचाएं - यही मंगल कामना है।

छद्मस्थों द्वारा लिखा होने एवं छद्मस्थ बुद्धि में धारण करने से तत्त्वज्ञान कभी पर्याप्त नहीं होता, अत: जितना है उतना बांटना चाहिये और अपनी भूख को बढाकर अधिक से अधिक पान करना चाहिये। शुभं भूयात्।

– संयम जैन

मेरा पहला अनुभव

मेरा नाम भव्या जैन है। मैं वर्तमान में टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय में अध्ययनरत हूँ। अर्हं पाठशाला द्वारा आयोजित ई-शिविर में मुझे लेवल 3 की कक्षा पढाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ऑनलाइन कक्षा पढाने का यह मेरा पहला अनुभव था और मुझे बहुत खुशी है कि मैं इस महाशिविर का एक हिस्सा बनी। कोरोना महामारी के समय इससे अच्छा समय का सदुपयोग हो ही नहीं सकता था। बहुत-बहुत धन्यवाद।

– भव्या जैन, दिल्ली

Eager to Learn and Understand the Principles of Jainism

After teaching the children of Arham Pathshala, it felt that the children are very eager to learn and understand the principles of Jainism. It was a pleasure teaching and interacting with them. I would just want to request the parents that now it is their responsibility to keep the children in this environment of leaning Jainism. Kindly, do not make the school home work and other activities such a big reason for children to get away from the religious knowledge. This knowledge will let them live happily and peacefully.

Arham pathshala team of scholars is always there and are ready to serve day and night.

- Sarvadarshi Bharill

India is Spiritual Super Power

India has been a spiritual super power since time immemorial and given the success of Maha e-Shivir (during Covid-19 lockdown), I have no doubt that India will remain an undisputed spiritual super power and continue to guide the world towards the path of enlightenment and eternal happiness. I feel blessed to have had an opportunity to teach Balbodh-2 in English to children across the world, many of whom had no prior exposure to Pathshala. Some children were very young and some wanted to reinforce their knowledge of Jainism fundamentals. All in all, everyone enjoyed the experience of online learning, colorful PPT's, Games/Activities, Bhakti/Pooja's, and Cultural programs.

- Charu Jain, Indore (Teacher: Level 3 - English)

जोरदार! जबरदस्त!! जिन्दाबाद!!!

पण्डित टोडरमल स्मारक द्वारा आयोजित ई-महाशिविर सम्पूर्ण विश्व में कौतूहल का विषय बना हुआ है। जिन लोगों को यह लगने लगा था कि अब लोग धर्म में रुचि नहीं लेते, अब कौन आत्मा की बात सुनाता है, करता है। आज के बच्चे तो टी.वी. में लगे रहते हैं, उनने जब 13000 शिविरार्थियों की संख्या सुनी तो उनकी आंखें खुली की खुली रह गईं।

21वीं सदी में उसी के तरीके से जो तत्त्वज्ञान का डंका बजाया है, उससे फिर टोडरमल स्मारक की छवि में चार चांद लग गये। जहाँ एक ओर सम्पूर्ण दुनिया अपने घरों में बंद है, वहीं अर्हं पाठशाला ने घर-घर में जिनवाणी पहुंचाकर एक नवीन प्रयोग किया है।

मैं अपने आपको बहुत सौभाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे भी इस अद्वितीय प्रयोग में सहयोग देने का अवसर मिला। मैंने अपने अध्ययन काल में 15 से भी ज्यादा ग्रुप और बाल संस्कार शिविर किए, जिसके लिये मैं बहुत सारे गांव-शहरों में गया, लेकिन इस एक शिविर में ही मैं 15 जगह के बच्चों को एक साथ पढा सका, यह भी एक अलग ही अनुभव है। कोई बुन्देलखण्ड का है तो कोई कर्नाटक का, कोई दिल्ली का है तो कोई गोवा का, कोई भोपाल का है तो कोई भिण्ड का; मानो सम्पूर्ण भारत को शिविर में पढा रहा हूँ। लेकिन उससे भी ज्यादा अच्छा मुझे यह लगा कि मेरी कक्षा का निरीक्षण आदरणीय छोटे दादा ने किया।

यह एक ऐसा अनुभव था जैसे मानो मेरी बी.एड. का फाइनल लेसन हो गया हो। इसे ऐसा भी कह सकते हैं कि यह एक शिविर टोडरमल स्मारक का ''शिविर 2.0'' है, जिसने एक नवीन क्रांति का प्रारम्भ कर दिया है। आज भी लोग धर्म की रुचि रखते हैं, श्रद्धा रखते हैं, आस्था रखते हैं। यह शिविर **फिर खूब लगे और लगता रहे।** ई-शिविर के संयोजक निर्देशक महोदय का बहुत-बहुत आभार मानता हूँ कि मुझे इस योग्य समझा। शिविर की अपार सफलता पर संपूर्ण टीम को बहुत-बहुत बधाई!

- नीशू शास्त्री (मड़देवरा), जयपुर

अद्भुत बहुत अद्भुत!!!

पिछले 6 दिनों से इस ई-शिविर में पढाने का कार्य कर रहा हूँ। बहुत बार अनेक जगह पर पढाया, अनेक शिविरों में पढाया, लेकिन इस ई-शिविर में पढाने का अनुभव कुछ अलग ही रहा है। वास्तव में स्मारक के द्वारा जो यह महान कार्य किया गया, एक बार फिर से यह बात सिद्ध हो गई कि स्मारक एवं वहाँ के विद्यार्थी वो बड़े से बड़ा कार्य कर सकते हैं, जो अन्य संस्था की सोच से बहुत दूर है।

मुझे गर्व है कि मैं भी उसी संस्था का विद्यार्थी हूँ। मैं सिर्फ यह कहना चाहूंगा, जिस लगन और रुचि से लोग अपने घरों में जिनवाणी सुन रहे हैं, मेरी नजर में यह अनेक शिविरों और पंचकल्याणक से बहुत ज्यादा प्रभावना वाला कार्य है। चाहे वह खर्च की अपेक्षा हो या व्यवस्था की दृष्टि से, मेरी भावना तो यही है कि यह जो अद्वितीय कार्य इस वर्ष प्रारम्भ किया गया है, यह महाशिविर हमारे प्रतिवर्ष के कार्यों में जोड़ लिया जावे और इसी तरह जिनधर्म की प्रभावना हो।

- डॉ. अंकित शास्त्री, लूणदा

शिविर का प्रभाव

अब तक शिविर सहज चला था
आज समापन हो ना पाया
मन द्रवित हुआ यह जानकर
फिर प्राग अभाव ख्याल में आया
क्या कल हो पायेगा समापन
मन में उठने लगा प्रश्न
क्यों लाता है ऐसे भाव
समझ में रख प्रध्वंस अभाव
जब यूट्यूब सही चल रहा है
तब ज़ूम में क्या समस्या आयी
क्यों तू विचलित होता है
समझ ले अन्योन्य अभाव भाई
यथा विधि यदि समापन होता
आत्मा में सुख पा जाता
क्यों भूल करे रे ऐ भाई
इनमें अत्यंत अभाव है आता

- अंकित जैन, दिल्ली

अभिभावकों एवं शिविरार्थियों की कलम से...

तकनीक का सही उपयोग

टेक्नोलॉजी का पॉजिटिव उपयोग विपरीत समय में कितना पॉजिटिव और बड़ा काम कर सकता है, यह अर्हं पाठशाला के ई-शिविर ने करके दिखाया है। महामारी के प्रतिकूल समय में हमारे परिणामों को स्थिर रखने और समय का सदुपयोग करते हुए हमारे ज्ञानवर्धन का काम इस शिविर ने किया है। मैं आशा करता हूँ कि यह क्रम जारी रहेगा, आगे बढता रहेगा और धर्म प्रभावना होती रहेगी। मेरी तरफ से एक व्यवस्थित और सुनियोजित आयोजन के लिये पूरी अर्हं टीम को बहुत-बहुत बधाई! **– अनेकान्त भारिल्ल, जयपुर**

अपने को अपने में लॉकडाउन... !

लॉकडाउन के समय अचानक ही अर्हं पाठशाला की टीम को शिविर लगाने का विचार आया। जब दुनिया के सब लोग कोरोना वायरस की चर्चा में व्यस्त थे, तब इस शिविर के माध्यम से भाग्यशाली लोगों ने चैतन्यरस का स्वाद लेने की कला सीखी। मैंने अनेक लोगों से यह सुना कि लॉकडाउन हमारे कल्याण के लिये वरदान साबित हुआ; क्योंकि इस लॉकडाउन में हमने अपने को अपने में लॉकडाउन करने की कला सीखी। बाहर में मंदिर बन्द थे, मगर मैंने घर-घर को मंदिर बनते देखा। मुझे ऐसा लगता था कि फिजिकल शिविर ही सिस्टमेटिक व ऑर्गनाइज्ड होते हैं; पर इस ऑनलाइन शिविर में लोगों को घर बैठे-बैठे ही सुबह से भावपूजन, कक्षाएं, भक्ति, प्रवचन व सांस्कृतिक कार्यक्रमों को बड़े ही उत्साह व रुचि के साथ अटेंड करते हुए देखा। जहाँ लोग घर में फालतू बैठे-बैठे खाने-पीने में, सोने में, खेलने में, नाचने में अथवा फालतू के नये-नये वीडियो बनाने में अपना समय बर्बाद कर रहे थे, वहीं इस शिविर के माध्यम से शिविरार्थियों ने महापुरुषों के जीवन व जैनसिद्धांतों पर छोटे-छोटे वीडियो बनाने में अपने समय का सदुपयोग किया। एक्टिविटीज के माध्यम से बच्चों में विविध प्रकार की प्रतिभाएं देखी गईं। अर्हं पाठशाला ई-शिविर की पूरी मैनेजिंग टीम ने जिस प्रकार दिनरात एक कर मेहनत करते हुए शिविर को सफल बनाया है, मैं उसकी प्रत्यक्ष साक्षी हूँ। इसी प्रकार के शिविर आगे भी लगते रहें। अर्हं पाठशाला की टीम को बहुत बहुत बधाई एवं आभार। **– संस्कृति गोधा, जयपुर**

अनेक अनेक साधुवाद

वर्तमानकालीन कोरोना वायरस के प्रकोप से उत्पन्न वैश्विक महामारी से जहाँ सारी दुनिया बेहाल हो रही थी, वहीं दूसरी ओर जैनधर्म का बच्चा-बच्चा संस्कारों से मालामाल हो रहा था और यह कमाल केवल और केवल अर्हं पाठशाला द्वारा आयोजित अन्तरराष्ट्रीय ऑनलाइन महा ई-शिविर के कारण से ही संभव हो सका। इस महाशिविर में मुझे अध्यापक और अभिभावक दोनों के नाते जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिसके कारण अध्यापन और अध्ययन साथ-साथ होता रहा।

इस शिविर में मेरे सुपुत्र चि. आर्जव को बेस्ट स्टूडेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया, जो हम सभी के लिये गौरवपूर्ण क्षण था। इस शिविर के माध्यम से उसकी सुप्त प्रतिभा से हम दोनो माता-पिता भी सुयोग्यरूप से परिचित हो सके। इस ऐतिहासिक और अनेकों कीर्तिमान स्थापित कर चुके महाशिविर के सभी आयोजकों और संयोजकों को अनेक-अनेक साधुवाद। जय-जिनेन्द्र। **– चिन्तामण शास्त्री, कारंजा**

Wish to Continue Shivir in Future

E-Shivir was undoubtedly excellent in terms of learning jain darshan in an extraordinary way.
It was wonderfully organised and achieved great success.
Not only kids but each and every member of the family took great participation with enthusiasm. In current scenario this was the best booster for everyone.
So I wish all the best to the Arham team for great efforts and also wish that these type of shivir will continue in future. Thank you **- Shuchi Bharill, Jaipur**

महावीर का संदेश घर-घर पहुंचाया

मैं धर्मी शाह बोरिवली-मुम्बई से आज यहाँ पर आपके समक्ष अर्हं पाठशाला ई-शिविर से हुए लाभ बताना चाहती हूँ। मैं हमेशा मेरे घरवालों से पूछती कि मेरा नाम धर्मी क्यो रखा, परन्तु धर्म का असली मतलब मुझे इस अर्हं पाठशाला ई-शिविर में समझाया गया और इस जीवन में धर्म की प्राप्ति हो यही इस मनुष्य भव का उद्देश्य है।

अर्हं पाठशाला ई-शिविर में मुझे जीव-अजीव आदि की पहचान हुई। स्कूल में तो सिर्फ बाहरी चीजों का ज्ञान देते हैं, परन्तु यहाँ आकर मुझे अपने बारे में खबर हुई कि मैं कौन हूँ। अर्हं पाठशाला ई-शिविर में हमें महान नायकों के जीवन-चरित्र के बारे में जानने पर ज्ञात हुआ कि असल में रोल मॉडल वही है, जिसने स्व को जाना और स्वयं को इन कषाय, पुण्य-पाप और मिथ्यात्व से छुड़ाकर एक शुद्धरूप में स्थापित किया। इसलिये इन सारी बातों की खबर मुझे इस अर्हं पाठशाला ई-शिविर से जुड़ने पर हुई। मुझे अपने चैतन्य निधि की पहिचान कराने के लिये सभी पण्डितजी एवं कार्यकर्ताओं का आभार मानती हूँ।

अर्हं पाठशाला ई-शिविर ने सच में महावीर का संदेश घर-घर तक पहुंचाया है। **– धर्मी शाह, मुम्बई**

कक्षा का इंतजार रहता था

मैं शिविर में होने वाले अनुभव आपके साथ साझा करना चाहता हूँ। जब सूचना सुनी और पढी कि ऑनलाइन शिविर चलेगा, जिसमें छोटे-बड़े सभी को धार्मिक शिक्षा दी जावेगी तो मुझे उस समय जरा भी विश्वास नहीं हो रहा था कि कोई ऑनलाइन भी कुछ सीख सकता है, अपना जीवन बदल सकता है। मुझे बड़ी खुशी है कि आप सभी के प्रयास से लगाये गये इस शिविर में मैंने वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1 का शिष्य बनकर अध्ययन किया। हमारे अध्यापक ने बहुत ही मेहनतपूर्वक हमें पढाया। अगले दिन होने वाली कक्षा में पहले दिन के प्रश्नों को पूछा, जिससे हम लोगों की रुचि उसमें बनी रही और हमें पढने के बाद तुरंत आगे की कक्षा का इंतजार रहता कि कब पुन: कक्षा का समय हो और हम बहुत बढिया-बढिया बातें सीखें एवं उन्हें जीवन में अपनाएं। मैं इस शिविर को लगाने वाले संयोजकों एवं इस शिविर को सुचारूरूप से चलाने वाले अन्य सहयोगियों को बहुत-बहुत धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ कि आप लोगों के माध्यम से इस विपरीत काल में भी जब कोई घर से बाहर नहीं निकल सकता, तब आप लोगों ने समय का सदुपयोग कर हम सभी को लाभान्वित किया, उसके लिये मैं पूरी टीम का धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। साथ ही साथ खुशी की बात यह है कि मैंने अपनी परीक्षा में द्वितीय स्थान प्राप्त किया, जो मुझे हमेशा याद रहेगा। यह तो मेरे स्वयं के लाभ की बात हुई, परन्तु मैंने अपनी कक्षा के तुरंत बाद मेरे पिता श्री निलयजी शास्त्री जो इस शिविर में छहढाला की क्लास पढा रहे थे, उनका टेक्निकल हैल्पर बनकर उनका सहयोग किया, जिससे मुझे छहढाला की दूसरी ढाल भी पढने का मौका मिला। अत: मुझे इस शिविर से दोहरा लाभ हुआ। आप सभी इस प्रकार के शिविर हमेशा लगाते रहें और बच्चों, युवाओं, वृद्धों सभी को धार्मिक शिक्षा प्रदान करते रहें - ऐसी भावना के साथ सभी को जय-जिनेन्द्र।

- नियम जैन, आगरा

Thank all the Shivir Shastrijis

Jai Jinendra

My name is Chiranshi Shah. Today I want to describe my experience with Arham Pathshala Shivir. Before attending the Shivir, I was having basic knowledge of jainism what I acquired during regular pathshala sessions, but during the Shivir, I was able to learn lot of things in details and ask my questions and clearify doubts. The learnings I have acquired in Shivir would help me in my future learnings and carryover with me for lifetime. I would like to take this opportunity to thank all the Shivir shastrijis for their really insightful sessions and helping us kids to learn in a fun way.

As they said in the Shivir - " Bhakt nahi Bhagwan". We all have capability to become Bhagwan and I'll try by best to go that route.

- Chiranshi Shah, U.S.A.

सच्ची और अच्छी बातें सीखीं

अर्हं पाठशाला द्वारा आयोजित अन्तरराष्ट्रीय ई-शिविर में मुझे बहुत सारी सच्ची-सच्ची और अच्छी-अच्छी बातें सीखने को मिली, जिसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ। इस शिविर से जो ज्ञान मैंने प्राप्त किया है, उसे मैं जीवनभर याद रखने का प्रयास करूंगा। इस शिविर में मुझे बेस्ट स्टूडेंट चुना गया, इसलिये मैं सभी आयोजकों और गुरुजनों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। अंत में मात्र इतनी ही भावना भाता हूँ कि ''इस पथ का उद्देश्य नहीं है, शांति भवन में टिक रहना। किन्तु पहुंचना उस मंजिल तक, जिसके आगे राह नहीं है।।''

- आर्जव चिंतामण भूस, कारंजा

घर शिविरमय हो गया

अर्हं पाठशाला द्वारा आयोजित ई-शिविर बहुत ही अच्छा संपन्न हुआ। यह एक बहुत अच्छी कल्पना थी कि लॉकडाउन के चलते हमारे नगर-नगर में होने वाले फिजिकल शिविरों को हमने ई-शिविर का रूप दिया और यह शिविर सिर्फ कुछ नगरों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि देश-दुनिया के लोगों तक पहुंचा। मैं वीतराग-विज्ञान 3 लेवल का छात्र था और मेरे कक्षा अध्यापक गणतंत्रजी थे। उन्होंने बहुत ही अच्छे और सरल तरीके से हमें हर पाठ पढाया।

शिविर के उन आठ दिनों में हमारा घर भी शिविरमय हो गया था। मेरे घर के सभी सदस्य किसी ना किसी रूप से शिविर से जुड़े थे। मेरी मम्मी, मैं और मेरी बहन जहाँ छात्र के रूप में जुड़े थे, वहीं मेरी धर्मपत्नी प्रतीति मोदी कोर टीम में होने के साथ-साथ अध्यापक के रूप में भी सहयोग दे रही थी। उसी के कारण ये जानने को मिला कि शिविर की सफलता के पीछे कितने लोगों की कड़ी मेहनत रही।

सभी अध्यापक पूरी टीम टेक्निकल टीम को मैं हृदय से साधुवाद देता हूँ। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट व अर्हं पाठशाला का यह अद्भुत प्रयास था। यह निरंतर ऐसे ही गतिमान रहे - ऐसी मेरी मंगल भावना है।

- राहुल मोदी, नागपुर

अहं से अर्हं बनने की कला

अभी लॉकडाउन में स्कूल की छुट्टियाँ चल रही थी, घर से बाहर निकलना भी नहीं था। ऐसे समय में अर्हं पाठशाला द्वारा ऑनलाइन हाइटेक शिविर का आयोजन बहुत लाभकारी रहा। मैं शिविर में लेवल 6 (वीतराग विज्ञान भाग 2) का छात्र था। हमें पवित्र भैया बहुत अच्छा पढाते थे, कक्षा में अलग-अलग तरह के गेम और एक्टिविटी भी होती थी। आप सभी ऐसे शिविर लगाते रहें, जिससे हम जैसे बच्चों को धर्म की अच्छी-अच्छी बातें जानने और जीवन जीने की कला सीखने को मिले। शिविर में मैंने अहं से अर्हं बनने की कला सीखी।

- आर्जव गोधा, जयपुर

टीम मेम्बर्स की कलम से...

बहुत बड़े सौभाग्य की बात

इस शिविर का हिस्सा होना मेरे लिये बहुत बड़े सौभाग्य की बात है। इतना विशाल शिविर इतनी सारी कक्षाओं को संभालने एवं एक साथ पूरी दुनिया के 13000 साधर्मियों को जैनधर्म की सीख मिलने में निमित्त बनना, जीवन का सबसे सफल काम था, एक स्वप्न जैसा; सच में अद्भुत। सपने में भी मैं नहीं सोच सकता कि इस महा शिविर का मैं भी एक अहम हिस्सा था। इस शिविर ने सबके लिये एक मार्ग खोल दिया कि भले ही लोग शिविर में साक्षात् न आ सकें तो कोई बात नहीं हम तो घर में घुसकर हर घर में जैनधर्म का झण्डा बुलंद करेंगे।

– महेश फतेलाल मेहता

एक नया अनुभव

अर्हं पाठशाला द्वारा आयोजित इस ई-शिविर का अनुभव अद्वितीय था।

एक कल्पनातीत कार्य किया गया और उसका मैं भागी बना, ये मेरा परम सौभाग्य रहा। इस बड़े कार्य के लिये मुझे अवसर देने के लिये आयोजकों को सहृदय धन्यवाद ज्ञापित करना चाहूंगा। मैं विशेषकर आई.टी. में रुचि रखता था और आपके इस शिविर से मुझे बहुत अनुभव मिला, इतने बड़े आयोजन में आई.टी. टीम में मुझे टीमवर्क के साथ करने का भी अनुभव मिला।

मैं विश्वास दिलाता हूँ कि इस वीतरागी मार्ग की प्रभावना के लिये मुझसे जो बन पड़ेगा, मैं पूरी निष्ठा से उस प्रभावनाका सहयोगी बनकर अपना कार्य करूँगा। जय-जिनेन्द्र! **– अक्षत शास्त्री, विदिशा**

ऑनलाईन ई-शिविर

प्रौद्योगिक सहाय से हुआ ऑनलाइन ई-शिविर प्रारम्भ
स्वर्णिम अवसर यह आया जिनशासन की अनुमोदना करने का

ई-शिविर ने अवसर दिया अति सुन्दर
धार्मिक गतिविधियों में प्रवृत्त रहने का
बच्चे और बड़ों के उत्साह को देखकर
हमें भी आनंद आया तकनीकी काम करने का

अवसर यह था साधर्मियों से मिलकर
स्वाध्याय और तत्त्वचर्चा करने का
लॉकडाउन का समय बीता अति सुन्दर
तत्त्वाभ्यास करके सन्मार्ग पे आगे बढने का

– किंजल जैन (आई.टी. टीम)

ज्ञान का महायज्ञ

पण्डित टोडरमल स्मारक भवन में संचालित अर्हं पाठशाला द्वारा लॉकडाउन के समय में एक महाशिविर का आयोजन किया गया, जिसमें पूरा देश नहीं अपितु पूरा विश्व इस ज्ञान के महायज्ञ में सम्मिलित हुआ तथा सभी साधर्मियों ने इसका भरपूर लाभ लिया। मुझे भी इस ज्ञानयज्ञ में सम्मिलित होने का अवसर मिला, जिसके लिये मैं अपने आपको बहुत सौभाग्यशाली मानता हूँ। इसी तरह आगामी काल में भी यह सर्वज्ञ शासन जयवंत वर्ते- ऐसी मंगल भावना है।

– आकाश हलाज शास्त्री

डिजिटल युग में डिजिटल का सदुपयोग

यह शिविर मेरे लिये पहला ई-शिविर था, मेरा पहला अनुभव था। इस शिविर की सबसे विशेष बात यह थी कि मेरी रुचि और योग्यता के अनुसार मुझे इस शिविर में कार्य करने का अवसर मिला। मेरा नाम डिजिटल दीपम जैन शास्त्री है। इस डिजिटल युग में डिजिटल का उपयोग करके अर्हं पाठशाला ने तत्त्व का जो प्रचार किया है वो वास्तव में एक अद्वितीय कार्य है। अर्हं पाठशाला से मैं पहले से ही जुड़ा हुआ था, पर इस शिविर में मुझे आई.टी. टीम में कार्य करने का मौका मिला और इस चीज में मेरी रुचि भी बहुत अधिक है। साथ ही कॉलिंग टीम में काम करने का मौका भी मुझे मिला। इस शिविर में सभी स्नातक विद्वानों को कॉल लगाया गया। ऐसा आज से पहले शायद ही कभी हुआ हो, क्योंकि इस शिविर में मात्र स्मारक के विद्वान ही नहीं बांसवाड़ा व कोटा आदि अन्य स्थानों के स्नातकों को भी कॉल किया गया और सभी ने अपनी स्वीकृति दी। इससे हमें पता चला कि सभी स्नातक आज भी स्मारक के लिये समर्पित हैं। इस शिविर में मात्र कुछ विद्वानों ने नहीं, बल्कि हमारे सभी स्नातक और वर्तमान विद्यार्थियों ने एकसाथ मिलकर कार्य किया। यदि देखा जाये तो यह शिविर एक इतिहास को रच गया। ऐसे शिविर में नया अनुभव और ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मुझे मिला और शिविर के प्रारम्भ होने के 3 दिन पहले ही मेरे हाथ पर गंभीर चोट लगी, पर इस शिविर में सभी लोगों ने एकता के साथ काम किया, तभी मेरे हाथ में चोट होने पर भी कोई परेशानी नहीं हुई। इसके लिये आदरणीय

सुदीपजी शास्त्री, आकाशजी शास्त्री अमायन, महेशजी, आकाशजी शास्त्री कर्नाटक, पूजाजी, सृष्टिजी रोशनीजी आदि सभी की एकता और सहयोगके कारण ये सब हो पाया। इस शिविर की सबसे विशेष बात यह लगी कि अगर प्यास लगने पर समय पर पानी दिया जाये तो उस पानी की सार्थकता होती है, ठीक ऐसे ही अर्हं पाठशाला द्वारा इस कोरोना के भय के काल में जो तत्त्व परोसा गया, वास्तव में सभी लोगों ने इसे अपने जीवन में भी उतारा है और इस बुरे काल में सुखी होने का मार्ग सभी ने जाना है। देखा जाये तो अनुभव सुनाने को बहुत हैं, पर शब्द बहुत कम, इसलिये कुछ अनुभव यहाँ रखे हैं।

मुझे अनुभव सुनाने का अवसर अर्हं पाठशाला ने दिया और साथ ही शिविर में कार्य करने का अवसर दिया, उसके लिये अर्हं पाठशाला का बहुत बहुत धन्यवाद!

– दीपम शास्त्री

पंचम काल का एक महान आश्चर्य

आपदा को अवसर बनाना अगर आपको सीखना हो तो मिलिये पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से।

यह वह जीवंत तीर्थ है, जो विगत 54 वर्षों से सम्पूर्ण विश्व में जैनधर्म के प्रचार-प्रसार के लिये अग्रणीय है।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का एक उपक्रम है अर्हं पाठशाला। यह कोई सामान्य पाठशाला नहीं, यह एक विश्वव्यापी नये जमाने की नयी पाठशाला है। इस पाठशाला ने भयंकर भयावह वातावरण में एक खुशी की लहर ला दी।

जहाँ लोग चिंतित थे कि अब हम क्या करें? धर्म कैसे करें? कोई किसी से मिल नहीं पा रहा है। साधर्मियों का वियोग सहन भी नहीं होता है। ऐसे समय में अर्हं पाठशाला ने ऑनलाइन ई-शिविर का आयोजन किया, जिसने 13000 साधर्मियों को एक साथ मिला दिया और लॉकडाउन व कोरोना के दु:ख संकट को भुला दिया। इस शिविर के माध्यम से छोटे-छोटे बच्चों से लेकर 100 साल तक भाई-बहिनों ने तत्त्वज्ञान का भरपूर लाभ लिया, जो किसी दिव्यध्वनि प्रसारण से कम नहीं रहा। पूजन, भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से तो लोग गद्गद् हो गये और पूरे शिविर में चार चाँद तब लग गये जब आदरणीय छोटे दादाजी ने स्वयं एक-एक कक्षा में जाकर उसका निरीक्षण किया और लाभ लिया।

सचमुच यह तो पंचम काल का एक महान आश्चर्य है, जिसे सदियाँ याद करेंगी। इस शिविर से एक ऑनलाइन आध्यात्मिक क्रांतिका शंखनाद हो गया, जिसके बाद संपूर्ण जैन समाज में अनवरतरूप से शिविर ही शिविर चल रहे हैं।

हम हार्दिक आभारी हैं हमारे समस्त विद्वत्वर्ग के जिनके मंगल उपदेश से ही यह ज्ञानयज्ञ सफल हो पाया।

यह तो इस क्रांति की शुरुआत है, पूरी पिक्चर अभी बाकी है।

– जिनेन्द्र शास्त्री, जयपुर

प्रतिवर्ष लगे ऐसा शिविर

अर्हं पाठशाला द्वारा लगा हुआ ई-शिविर जिसमें 24 देशों के13 हजार से ज्यादा बच्चे जुड़े, इसमें बच्चों ने खूब उत्साह से भाग लिया। शिविर में प्रात: पूजन एवं विभिन्न विद्वानों द्वारा कक्षाएं हुई, जिसमें बच्चों ने कई पुरस्कार जीते। मैं एक्टिविटी टीम का मेन्टर था, मेरे 3 सहयोगी भी थे। मुझे जब लोग एक्टिविटी भेजा करते थे, वो देखकर बहुत प्रसन्नता होती थी। मुझे यह ई-शिविर बहुत अच्छा लगा और मैं चाहता हूँ प्रतिवर्ष ऐसा शिविर लगे, जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग लाभ ले पाएं।

– सिद्धार्थ जैन

एक अकल्पनीय शिविर

''जो जो देखी वीतराग ने, सो सो होसी वीरा रे।
अनहोनी होसी नहीं जग में, काहे होत अधीरा रे।।''

अर्थात् जगत का परिणमन स्वतंत्र है, क्रमबद्ध है। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा जो प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी जो श्री वीतराग विज्ञान शिक्षण प्रशिक्षण शिविर आयोजित होने जा रहा था, वह कोरोना महामारी के कारण निरस्त हो गया; परन्तु आयोजनकर्ता इस परेशानी से अधीर नहीं हुए। चूंकि तत्त्वज्ञान के प्रति संकल्पित पुरुष, तत्त्वज्ञान को घर-घर तक पहुंचाने के लिये किसी भी कठिनाई के सामने झुकते नहीं, अपितु उसका सामना करते हैं। ऐसा ही कुछ कार्य किया अर्हं पाठशाला की टीम ने। एक अकल्पनीय, अद्वितीय एवं अद्भुत ऑनलाइन ई-शिविर का आयोजन किया, जिसमें मात्र दिगम्बर जैन समाज नहीं, अपितु अन्य श्वेताम्बर व हिन्दु समाज के 15000 तक लोग जुड़े और तत्त्वज्ञान से लाभान्वित हुए। यह शिविर अद्वितीय मात्र इसलिये नहीं है कि यह सर्वप्रथम ऑनलाइन शिविर है, बल्कि इसलिये भी क्योंकि इसमें पहली बार जैन व अजैन सभी ने अपने घर पर रहकर तत्त्वज्ञान की चर्चा सुनी।

इस शिविर से जैनसमाज के कितने बच्चों को धर्म के संस्कार मिले, कितने युवाओं को वास्तविक धर्म का परिचय मिला। इसकी गणना भी नहीं की जा सकती। वास्तव में जिनवाणी को जन-जन की वाणी बनाना ही हमारा ध्येय है एवं इस ध्येय को हम हर परिस्थिति में पूरा करेंगे।

– समर्थ जैन (उपाध्याय वरिष्ठ)

अनुभव के मार्ग पर आगे बढने का समय

जिणसत्थादो अट्ठे पच्चक्खादीहिं बुज्झदो णियमा।
खीयदि मोहोवचयो तम्हा सत्थं समधिदव्वं।।

अर्थात् जिनशास्त्र द्वारा प्रत्यक्षादि प्रमाणों से पदार्थों को जानने वाले के नियम से मोह का क्षय हो जाता है, इसलिये शास्त्र का सम्यक् प्रकार से अध्ययन करना चाहिये।

इसलिये और ज्यादा क्या कहें रस्म-ए-दुनिया भी है मौका भी है और दस्तूर भी...कि तमाम व्यर्थ चेष्टाओं से विराम लें और अपने प्रयोजन को सर्व प्रकार से इस वक्त में साध लें -

विरम किमपरेण कार्यकोलाहलेन
स्वयमपि निभृत: सन् पश्यषण्मासमेकम्।
हृदयसरसि पुंस: पुद्गलाद् भिन्नधाम्नो
ननु किमनुपलब्धिर्भाति किं चोपलब्धि:।।

मौजूदा हालात देखकर लग रहा है कि संभवत: कम से कम छ: माह का वक्त तो ऐसा ही बीतने जा रहा है तो क्यों न सभी अकार्य कोलाहल से विरक्त हो स्वयं को शरीरादि पुद्गलों से भिन्न अनुभवने के मार्ग में आगे बढा जाये और उसका सबसे प्रबल हेतु आगम का अध्ययन है। कहा भी है आगमचेट्ठा तदो जेट्ठा।

इसलिये अब तो स्वयं को सर्वप्रकार से आगम में झोंकते हुए आचार्य अमृतचन्द्र के उस कथन को सार्थक करना है कि ''ततो नान्यर्द्धतम निर्वाणस्येत्यवधार्यते। अलमथवा प्रलपितेन। व्यवस्थिता मतिर्मम। नमो भगवद्भ्य:।'' अर्थात् अब मुझे जिनोपदिष्ट नि:श्रेयस का मार्ग प्राप्त हुआ है, निर्वाण का अन्य कोई मार्ग नहीं है - ऐसा निश्चित होता है अथवा अधिक प्रलाप से बस होओ! मेरी मति व्यवस्थित हो गई है। निर्वाण का मार्ग बताने वाले और उसे पाने वाले भगवन्तों को नमस्कार हो।

और ऐसा तभी संभव है जब हम आगम के सम्यक् अध्ययन से अपनी अव्यवस्थित मति को व्यवस्थित करें और व्यग्रता को छोड़ एकाग्रता को प्राप्त करें।

टोडरमल स्मारक, अर्हं पाठशाला और इसके प्रयासों से प्रसन्नता की जो लड़ियां प्रस्फुटित होती हैं कि इस पर खुद को वारने को जी चाहता है। बालपोथी, बालबोध क जरिये नन्हें मासूम नौनिहालों को पढा रहे उन छात्र विद्वानों को सिर-आंखों पर बैठाने को जी चाहता है। दिनरात अनेक तकनीकी प्रबंधकीय कार्यों के जरिये इस वर्चुअल माध्यम को रियल बनाने में लगे समर्थ कार्यकर्ताओं को सहृदयता के उन्माद से गले लगाने को जी चाहता है। और क्या कहें भाई जिन आंधियों में सुविधाओं के बड़े-बड़े आशियां बिखर गये, वहाँ तुमने जो तत्त्वज्ञान का महल खड़ा किया है, वो तुम्हारी जीवटता का प्रमाण है। आखिर में कभी न खत्म होने वाले अहसासात को चंद लफ्जों के जरिये पूर्ण करता हूँ -

जहाँ आसमां को जिद है बिजलियाँ गिराने की,
हमें भी जिद है वहीं आशियां बनाने की।
आंधियों से कोई कह दो अपनी औकात में रहे,
क्योंकि अब हमने की है हिम्मत सर उठाने की।।

- अंकुर शास्त्री, भोपाल

कविता

वाह...!! अहं से अर्हं बनने का क्या सुनहरा अवसर आया था
जन-जन में खुशहाली छायी थी, ई-शिविर की आंधी आयी थी
बच्चे-बच्चे ने उत्साहित होकर अपना नाम लिखाया था
वाह...!! अहं से अर्हं बनने का क्या सुनहरा अवसर आया था
सब उम्र-जाति के लोग जुड़े सबके अनुसार विषय भी थे
छह भाषाओं में दुनिया को जिनध्वनि का सार सुनाया था
वाह...!! अहं से अर्हं बनने का क्या सुनहरा अवसर आया था
'**टोडरमलजी**' की जन्मजयंती पर '**गुरुदेव**' प्रभावना योग महा
अद्भुत ऊर्जा का संचार '**टोडरमल स्मारक**' से होता था
वाह...!! अहं से अर्हं बनने का क्या सुनहरा अवसर आया था
सौधर्म '**दादा**', श्री '**संजीव**' '**एस.पी.**' कुबेरवत लगे रहे
ऑनलाइन '**आकाश**' में '**प्रेम**' '**शांति**' से समवशरण रचवाया था
वाह...!! अहं से अर्हं बनने का क्या सुनहरा अवसर आया था
इस '**धर्मेन्द्र**' चक्र से तत्त्वसुमन के घर-घर मानो '**विपिन**' बने
चित में '**विराग**' सु-'**प्रतीति**' '**विवेक**' से ज्ञान '**सुदीप**' जलाया था
वाह...!! अहं से अर्हं बनने का क्या सुनहरा अवसर आया था
सबको ज्ञान '**पीयूष**' पिलाया, जिससे जीवन होवे '**विनीत**'
बस '**जिनकुमार**' बनकर सबको मैं '**परमात्म**' हूँ ध्याना था
वाह...!! अहं से अर्हं बनने का क्या सुनहरा अवसर आया था
निज '**ज्ञायक**' '**अनुभव**' हो जाए, है जिनवाणी को जीवन 'अर्पित'
सबको ''**समकित**'' की प्राप्ति हो बस एकमात्र उद्देश्य ये था
वाह...!! अहं से अर्हं बनने का क्या सुनहरा अवसर आया था

- समकित शास्त्री, खनियांधाना (अर्हं टीम)

यह तो एक शुरुआत है

'ज्ञानदीप है जिसके अन्दर वे प्रकाश में ही जीते हैं' उक्ति सार्थक हुई, विश्व महामारी के समय तत्त्वज्ञान का वैक्सीन निश्चित ही हमें अमरत्व प्रदान करेगा। इस ऐतिहासिक पहल को युगों-युगों तक स्मरण किया जायेगा। पूज्य गुरुदेवश्री के पुण्य-प्रभावना योग में यह ऐतिहासिक कार्य निश्चित ही हमारे आदरणीय दादाजी का आशीर्वाद एवं हम समस्त कर्मठ शास्त्री परिषद् का ही सत्प्रयास है। अर्हं सिर्फ नाम नहीं पहचान होगी हम सभी की। बस यह तो एक शुरुआत है, पिक्चर अभी बाकी है मेरे दोस्त....आयोजक मण्डल को हार्दिक बधाई! शुभकामनाएं!! बहुत बहुत बधाई!!! **- मनीष शास्त्री सिद्धांत**

सहजता से परिपूर्ण अर्हं पाठशाला

अर्हं पाठशाला द्वारा आयोजित शिविर अपने आपमें एक नयी ऊर्जा को लिये हुए था। उसका हर्ष मैंने केवल बच्चों में ही नहीं बुजुर्गों में भी महसूस किया है। उसके द्वारा जो तत्त्व केवल 7 दिनों में जन-जन तक परोसा गया। वो बहुत ही अद्भुत और लोकप्रिय हैं। अर्हं पाठशाला की अद्भुतता उसकी सहजता है। मुझे विद्वान को-ऑर्डिनेटर चुनने के लिये मैं अर्हं पाठशाला का धन्यवाद देना चाहता हूँ। **- चेतन शास्त्री, आगरा कोटा**

• नेशनल लेवल पर स्थान प्राप्त शिविरार्थी •

Student Name	Father / Husband Name	Rank	Level	City Name
Aagamya Jain	Piyush Jain	1st Rank	L-01	Alaknanda
Anvay Jain	Abhinav Jain	1st Rank	L-02	Surat
Samyak Jain	Sanjeev Kumar Jain	1st Rank	L-03	Baraut
Swati Jain	Saurabh Jain	1st Rank	L-04	Khaderi
Jinam Jain	Sanjay Sethi	1st Rank	L-05	Jaipur
Mudit Jain	Santosh Kumar Jain	1st Rank	L-06	Tokar
Richa Jain	Pramod Kumar Jain	1st Rank	L-07	Akajhiri, Shivpuri
Shilpy Jain	Sudip Jain	1st Rank	L-08	Indore
Priyanka Pancholiya	Avinash Pancholiya	1st Rank	L-09	Bengaluru
Pratibha Jain	Mr. Vijay Jain	1st Rank	L-10	Kolaras

Student Name	Father / Husband Name	Rank	Level	City Name
Suhani Jain	Abhishek Jain	2nd Rank	L-01	Delhi
Labdhi Jain	Pratik Jain	2nd Rank	L-02	Malkapur
Siddhansh Jain	Ajay Jain	2nd Rank	L-03	Vidisha
Ishita Jain	Ritesh Jain	2nd Rank	L-04	Chennai
Niyam Jain	Mr.Nilay Kumar Jain	2nd Rank	L-05	Agra
Harshita Jain	Khem Chand Jain	2nd Rank	L-06	Udaipur
Gyapti Jain	Manoj Jain	2nd Rank	L-07	Delhi
Nipeksha Jain	Dr. Mahaveer Prasad Jain	2nd Rank	L-08	Udaipur
Dhruv Shah	Bindesh	2nd Rank	L-09	Vasai
Ashini Doshi	Nitin Doshi	2nd Rank	L-10	Dahod

Student Name	Father / Husband Name	Rank	Level	City Name
Aradhya Jain	Ankur Jain	3rd Rank	L-01	Muzaffarnagar
Nitya Bhavin Jain	Bhavin Jain	3rd Rank	L-02	Ahmedabad
Animesh Jain	Rajeev Jain	3rd Rank	L-03	Gandhidham
Vishudhi Jain	Vikas Jain	3rd Rank	L-04	Delhi
Mamta Jain	Mamta Jain	3rd Rank	L-05	Damoh
Akshat Jain	Anant Jain	3rd Rank	L-06	Vikhroli, Mumbai
Harshit Jain	Ajit Jain	3rd Rank	L-07	Akajhiri
Payal Jain	Dr .Mahaveer Prasad Jain	3rd Rank	L-08	Udaipur
Sparsh Jain	Sanjay Kumar Jain	3rd Rank	L-09	East Delhi
Mamta Doshi	Nitin Doshi	3rd Rank	L-10	Dahod

जैन ई-ग्रुप शिविर में लाभ प्रदान करने वाले विद्वत्गण –

मयंक शास्त्री लखनादौन
उर्विश शास्त्री देवलाली
निमित अजमेरा इन्दौर
भूपेन्द्र शास्त्री विदिशा
चारु जैन इन्दौर
अक्षय शास्त्री औरंगाबाद
वैशाली जैन अहमदाबाद
समकित शास्त्री दलपतपुर
नवीन शास्त्री ज्ञानोदय
नीशू शास्त्री जयपुर
सिद्धार्थ शास्त्री मुंगावली
नयन शास्त्री खनियांधाना
प्रतीक शास्त्री विदिशा
अक्षय वाडेकर बेलगांव
वीकेश शास्त्री जयपुर
संदीप सेठ अमरमऊ
नीलेश शास्त्री घुवारा
अंकुर शास्त्री खड़ैरी
स्वप्निल शास्त्री सिवनी
संयम शास्त्री नागपुर
सचिन शास्त्री चैतन्यधाम
चिन्तामण शास्त्री कारंजा
आकाश शास्त्री टडा
अनुभव जैन जबलपुर
दीपक शास्त्री तिगोडा
शिखर शास्त्री बांसवाड़ा
स्वप्निल शास्त्री भोपाल
नमन शास्त्री खनियांधाना
आशीष शास्त्री टीकमगढ
अर्पित शास्त्री ग्वालियर
पवित्र शास्त्री आगरा
जिनकुमार शास्त्री जयपुर
अमन शास्त्री दिल्ली
गणतंत्र शास्त्री आगरा
ऋषभ शास्त्री अहमदाबाद
सम्मेद गांधी नातेपुते
अभिषेक शास्त्री मुम्बई
मंथन गाला मुम्बई
शुभम शास्त्री ज्ञानोदय
तपिश शास्त्री उदयपुर
स्वस्ति सेठी जयपुर
प्रतीक शास्त्री मुम्बई
वीरेन्द्र शास्त्री कर्नाटक
संयम शास्त्री कारंजा
स्वप्निल वायकोस औरंगा.
जय शास्त्री डासाला
जीवेश शास्त्री पिड़ावा
प्रिंस शास्त्री ज्ञानोदय
सहज शास्त्री पिड़ावा
समर्थ शास्त्री हरदा
समकित शास्त्री गुना
संदेश शास्त्री दिल्ली
इशिका जैन दिल्ली
संयम शास्त्री खनियांधाना
तुषार शास्त्री दिल्ली
सफल शास्त्री ज्ञानोदय
सुनीता जैन अहमदाबाद
संजय राउत औरंगाबाद
गजेन्द्र शास्त्री उदयपुर
निलय शास्त्री आगरा
सुमित शास्त्री ज्ञानोदय
प्रियंक शास्त्री खुरई
समकित शास्त्री गुना
आशीष शास्त्री मडावरा
कमलेश शास्त्री टीकमगढ
चिन्मय शास्त्री इन्दौर
वीकेश शास्त्री बानपुर
अंकित शास्त्री लूणदा
शनि शास्त्री खनियांधाना
संभव शास्त्री दिल्ली
पल शास्त्री अहमदाबाद
मिथुन शास्त्री कर्नाटक
सौरभ शास्त्री परली
अमोल महाजन परभणी
अभिषेक शास्त्री सिलवानी
आप्त अनुशील शास्त्री दमोह
ज्ञायक शास्त्री सागर
मोहित शास्त्री बण्डा
शशांक शास्त्री चन्देरी
संयम शास्त्री दिल्ली
विक्रांत शास्त्री झालरापाटन
जितेन्द्र शास्त्री मुम्बई
अभय शास्त्री खैरागढ
अभिषेक शास्त्री अहमदाबाद
ऋषभ शास्त्री दिल्ली
प्रमोद शास्त्री जयपुर
अमन शास्त्री लोनी
अमोल शास्त्री हिंगोली
स्वर्णलता जैन नागपुर
महावीर शास्त्री उदयपुर
वीरेन्द्र शास्त्री बकस्वाहा
सुधीर शास्त्री इन्दौर
प्रियदर्शना जैन चेन्नई
शिवराज शास्त्री महाराष्ट्र
दृढता शास्त्री शाश्वतधाम
श्रुति शास्त्री खैरागढ
अनुप्रेक्षा शास्त्री बांसवाड़ा
भव्या शास्त्री दिल्ली
चारुल शास्त्री शाश्वतधाम
श्रद्धा शास्त्री शाश्वतधाम
सर्वदर्शी भारिल्ल जयपुर
स्वप्निल शास्त्री लम्बू
भाविका शास्त्री शाश्वतधाम
महिमा शास्त्री शाश्वतधाम
श्रुति आत्मार्थी दिल्ली
समीक्षा आत्मार्थी विदिशा
स्वानुभव शास्त्री खनियांधाना
श्रुति शास्त्री जयपुर
प्रशांत शास्त्री अमरमऊ
स्वाति शास्त्री नवसारी
पूजा शास्त्री लूणदा
रजनी शास्त्री श्योपुर
प्रतीति शास्त्री नागपुर
श्रद्धा शाह कनाडा
मुक्ति शास्त्री पूना
स्वानुभूति शास्त्री मुम्बई
ज्ञायक शास्त्री उदयपुर
अनुप्रेक्षा शास्त्री मुम्बई
ज्ञायक शास्त्री मुम्बई
अच्युतकांत शास्त्री जयपुर
जम्बूकुमारन शास्त्री तमिलनाडु
डॉ. धनकुमार शास्त्री तमिलनाडु
डॉ. उमापति शास्त्री तमिलनाडु
अशोककुमार शास्त्री तमिलनाडु
जयराजन शास्त्री तमिलनाडु
रामदास शास्त्री तमिलनाडु
नाभिराजन शास्त्री तमिलनाडु
सोमप्रभन शास्त्री तमिलनाडु
रमेश शास्त्री तमिलनाडु
जिनकुमार शास्त्री तमिलनाडु
अशोक शास्त्री तमिलनाडु
शरद शास्त्री तमिलनाडु
श्रीकांत जैन तमिलनाडु
पदमराज जैन तमिलनाडु
रविचंद्रन जैन तमिलनाडु
इलंगोवन शास्त्री कर्नाटक
सुधर्म आर. मुदलगी कर्नाटक
अजित कवटेकर कर्नाटक
रमेश शिरहट्टी कर्नाटक
भरत कोरे कर्नाटक
डॉ. राजेन्द्र पाटील कर्नाटक
सुधाकर इंडी कर्नाटक
अनेकान्त अलप्पनावर कर्नाटक
संतोष सन्नाम्मनवर कर्नाटक

टीम मेम्बर्स

ज्ञायक शास्त्री मुम्बई	S.O.P. टीम
विवेक शास्त्री इन्दौर	S.O.P. टीम
सुदीप शास्त्री मुम्बई	S.O.P. टीम
प्रतीति शास्त्री नागपुर	S.O.P. टीम
अर्पित शास्त्री ललितपुर	S.O.P. टीम
आकाश शास्त्री जयपुर	S.O.P. टीम
समकित शास्त्री खनियांधाना	S.O.P. टीम
अनुभव शास्त्री खनियांधाना	S.O.P. टीम
विनीत शास्त्री मुम्बई	S.O.P. टीम
महेश मुम्बई	I.T. टीम
जिग्नेशभाई मुम्बई	I.T. टीम
आशीष मुम्बई	I.T. टीम
राहुल मुम्बई	I.T. टीम
पूजा अहमदाबाद	I.T. टीम
करण शास्त्री	I.T. टीम
नील शास्त्री	I.T. टीम
विनीत शास्त्री	I.T. टीम
वीतराग शास्त्री	I.T. टीम
ऋषभ शास्त्री	I.T. टीम
अनिरुद्ध शास्त्री	I.T. टीम
प्रशांत शास्त्री	I.T. टीम
आभास जबलपुर	I.T. टीम
रोशनी औरंगाबाद	I.T. टीम
सृष्टि जैन	I.T. टीम
सागर शास्त्री	I.T. टीम
दीपम शास्त्री	I.T. टीम
किंजल जैन	I.T. टीम
अक्षत शास्त्री	I.T. टीम
राजेन्द्र जैन जयपुर	I.T. टीम
आकाश शास्त्री हलाज	I.T. टीम
चेतन शास्त्री कोटा	विद्वान टीम
ज्ञायक शास्त्री उदयपुर	विद्वान टीम
विनय जैन	विद्वान टीम
समर्थ विदिशा	विद्वान टीम
शाश्वत भोपाल	विद्वान टीम
सर्वदर्शी भारिल्ल जयपुर	एक्टिविटी
जिनेन्द्र शास्त्री	एक्टिविटी
कार्तिक शास्त्री	एक्टिविटी
सिद्धार्थ शास्त्री	एक्टिविटी
दीपकराज जैन	मीडिया
अशोक शास्त्री इन्दौर	प्रभारी प्रमुख
मयंक शास्त्री	प्रभारी प्रमुख
नितिन शास्त्री झालरापाटन	कण्ठपाठ विभाग
समर्थ शास्त्री हरदा	संपर्क टीम
शाश्वत शास्त्री जयपुर	संपर्क टीम
सम्यक् शास्त्री खनियांधाना	संपर्क टीम
आप्त अनुशील दमोह	संपर्क टीम
आयुष शास्त्री हटा	संपर्क टीम

एवं जयपुर, कोटा, बांसवाड़ा महाविद्यालय के स्नातक विद्यार्थियों ने अपना अभूतपूर्व सहयोग प्रदान किया।

सामूहिक कक्षा विशेषज्ञ विद्वान

डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल

पं. परमात्मप्रकाश भारिल्ल

पं. शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल

डॉ. संजीवकुमार गोधा

पं. संजय शास्त्री जेवर

पं. विपिन शास्त्री ,नागपुर

पं. विराग शास्त्री ,जबलपुर

Jain E-Group Shivir

अर्हं पाठशाला

Best Student of the Shivir Award

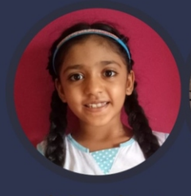

शौर्यका चौधरी
मुंबई

धर्मी शाह
बोरीवली-मुंबई

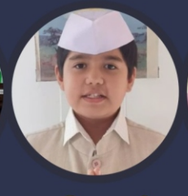

समकित सुधीर
बैंगलोर

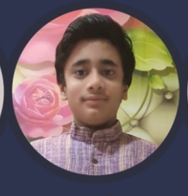

द्रव्य जैन
दिल्ली

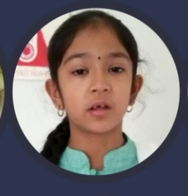

प्रज्ञा जैन
कैलिफोर्निया - यू.एस

आर्जव चिंतामन
भूस, कारंजा

अखबारों के आइने में E शिविर

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैन द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

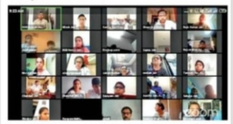

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com

प्रकाशन तिथि : 28 जून 2020

प्रति,